तकब्बुर का इल्म सीखना फ़र्ज़ है।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 624, मुलख़्ख़सन)

TAKABBUR (HINDI)

तकब्बुर

तकब्बुर किसे कहते हैं ?

तकब्बुर के 6 नुक़्सानात

तकब्बुर की 19 अ़लामात

अनोखी छींक

तकब्बुर के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़

तकब्बुर के 8 अस्बाब और उन का इलाज

ख़ुद को ह़क़ीर समझने का त़रीक़ा

बुज़ुर्गाने दीन की आ़जिज़ी की दस ह़िकायात

सात मुफ़ीद अवराद

مکتبۃ المدینہ (دعوتِ اسلامی)

SC 1286

मक-त-बतुल मदीना

अल मदी-नतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

المدینۃ العلمیۃ (دعوتِ اسلامی)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़: शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنۡ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है

اَللّٰهُمَّ افۡتَحۡ عَلَیۡنَا حِکۡمَتَکَ وَ انۡشُرۡ عَلَیۡنَا رَحۡمَتَکَ یَا ذَا الۡجَلَالِ وَ الۡاِکۡرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلۡمُستطرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना

व बक़ीअ़

व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1428 हि.

याद दाश्त

दौराने मुत़ा–लआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़न्वान	सफ़्ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा

तकब्बुर की तबाह कारियों, अ़लामात और इ़लाज का बयान

तकब्बुर

पेशकश

मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए इस्लाह़ी कुतुब, दा'वते इस्लामी)

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

नाम किताब : **तकब्बुर**
पेशकश : मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए इस्लाह़ी कुतुब, दा'वते इस्लामी)
सिने त़बाअ़त : **जुमादिल अव्वल** 1431 **हि.**
ब मुत़ाबिक़ : 11 **मई** 2010
नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद**

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : ..... ह़वाला : .....

الحمد لله رب العلمين والصلوٰة والسلام علىٰ سيد المرسلين وعلى اله واصحا به اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

''तकब्बुर''

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिया इ़बारात, अख़्लाक़ियात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इ़बारात वग़ैरह के ह़वाले से मक़्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)
26-11-2009

E-mail : ilmiya26@dawateislami.net
maktabahind@gmail.com
www.dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा: किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔

''आ़जिज़ी की ब-र-कतें'' के 13 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की ''13 निय्यतें''

फ़रमाने मुस्त़फ़ा نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهٖ ۝ : '' صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(المعجم الكبير للطبرانی، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

दो म-दनी फूल :

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादह, उतना सवाब भी ज़ियादह।

(1) हर बार ह़म्द व (2) सलात और (3) तअ़व्वुज़ व (4) तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा)। (5) ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और (6) क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा। (7) क़ुर्आनी आयात और (8) अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा (9) जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और (10) जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। (11) शर-ई मसाइल सीखूंगा। (12) अगर कोई बात समझ में न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा (13) किताबत वग़ैरह में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरह को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔

अल मदी-नतुल इल्मिय्या

अज़् : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

الحمد لله على اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صلى الله تعالى عليه وسلم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्न व ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या''** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللهُ تعالى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत (2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाही कुतुब (4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब (6) शो'बए तख़्रीज

'' अल मदी-नतुल इल्मिय्या'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **''दा'वते इस्लामी''** की तमाम मजालिस ब शुमूल **''अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या''** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुंबदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। **اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین** صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

फ़ेहरिस

उन्वान	सफ़हा नम्बर	उन्वान	सफ़हा नम्बर
निफ़ाक़ व नार से नजात	9	(6) जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा	25
मैं इस से बेहतर हूं	10	इस तकब्बुर का क्या ह़ासिल !	25
तकब्बुर ने कहीं का न छोड़ा !	11	तकब्बुर की 19 अ़लामात	27
तुम इसी ह़ालत पर रहना	12	अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले	27
सय्यिदुना जिब्राईल की गिर्या व ज़ारी	12	अ़-जमिय्यों की त़रह़ खड़े न रहा करो	28
येह इ़ब्रत की जा है	12	बयान कर्दा ह़दीस की तश्रीह़	28
तकब्बुर का इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है	13	अपने सरदार के पास उठ कर जाओ	29
तकब्बुर से बचने की फ़ज़ीलत	14	सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان खड़े हो कर	
इस रिसाले में क्या है ?	15	ता'ज़ीम किया करते	29
तकब्बुर किसे कहते हैं ?	16	दूरी में इज़ाफ़ा होता रहता है	30
तकब्बुर की 3 अक़्साम	16	जब ह़जाम बराबर आ कर बैठा.....	31
फ़िरऔ़न डूब मरा	16	देहातियों को नीचे न बैठने दिया	32
नमरूद की मच्छर के ज़रीए़ हलाकत	17	अनोखी छींक	35
तकब्बुर करने वाले की मिसाल	19	छींक की ब-र-कतें	35
इन्सान की हैसिय्यत ही क्या है ?	19	तकब्बुर के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़	36
आ़शिक़ाने रसूल के मीठे बोल की ब-रकात	20	तकब्बुर के नतीजे में पैदा होने वाली बुराइयां	37
तकब्बुर के 6 नुक़्सानात	22	तकब्बुर से जान छुड़ा लीजिये	37
(1) अल्लाह तआ़ला का ना पसन्दीदा बन्दा	22	तकब्बुर पर उभारने वाले 8 अस्बाब	
(2) म-दनी आक़ा صلى الله تعالى عليه واله وسلم का मु-तकब्बिर के लिये इज़्हारे नफ़रत	23	और उन का इ़लाज	39
(3) बद तरीन शख़्स	23	इ़ल्म से पैदा होने वाले तकब्बुर के इ़लाज	40
(4) क़ियामत में रुस्वाई	24	अहले इ़ल्म के तकब्बुर में मुब्तला होने का सबब	40
(5) टख़्ने से नीचे पाजामा लटकाना	24	आ़लिम का ख़ुद को "आ़लिम" समझना	41
		ख़ुद को आ़लिम कहने वाला जाहिल है !	42

उन्वान	सफ़हा नम्बर	उन्वान	सफ़हा नम्बर
सब से ज़ियादा अ़ज़ाब	43	दूसरा इमाम तलाश कर लो	56
खुद को ह़क़ीर समझने का त़रीक़ा	43	मालो दौलत से पैदा होने वाले तकब्बुर का इ़लाज	57
काफ़िर को काफ़िर कहना ज़रूरी है	45	बिला ह़िसाब जहन्नम में दाख़िला	57
येह मुझ से बेहतर है	46	आ़जिज़ी करने वाले दौलत मन्द के लिये खुश ख़बरी	58
ग़ैर नाफ़ेअ़ इ़ल्म से खुदा की पनाह	46	मालदार मु-तकब्बिर को अनोखी नसीह़त	58
क़ियामत के चार सुवालात	46	ह़सब व नसब की वजह से पैदा होने	
बुज़ुर्गाने दीन की आ़जिज़ी की दस ह़िकायात	47	वाले तकब्बुर का इ़लाज	59
(1) काश मैं परिन्दा होता	47	आबाओ अजदाद पर फ़ख़्र मत करो	59
(2) काश ! मैं फलदार पेड़ होता	47	9 पुश्तें जहन्नम में जाएंगी	60
(3) मैं इन की आ़जिज़ी देखना चाहता था	47	हुस्नो जमाल के तकब्बुर के इ़लाज	60
(4) इसी वजह से तो वोह ''मालिक'' हैं	48	ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम (رضی اللہ تعالیٰ عنہ) की नसीह़त	61
(5) इमाम फ़ख़्रुल इस्लाम के आंसू	48	ह़ज़रते अबू ज़र और ह़ज़रते बिलाल (رضی اللہ تعالیٰ عنہما) की ह़िकायत	61
(6) क़ैदियों के साथ खाना	49	हुस्न वाला नजात पाएगा..... मगर कब ?	62
(7) कुत्ते के लिये रास्ता छोड़ दिया	50	काम्याबियों की वजह से पैदा होने वाले	
(8) अपने दिल की निगरानी करते रहो	50	तकब्बुर का इ़लाज	63
(9) जब दरियाए दिजला इस्तिक़्बाल के लिये बढ़ा....	51	त़ाक़त व क़ुव्वत की वजह से पैदा	
(10) अब मस्जिद की गुन्जाइश नहीं	51	होने वाले तकब्बुर का इ़लाज	64
इ़बादत से पैदा होने वाले तकब्बुर का इ़लाज	52	ओ़हदा व मन्सब की वजह से पैदा	
इसराईली इ़बादत गुज़ार और गुनहगार	53	होने वाले तकब्बुर का इ़लाज	64
बद नसीब आ़बिद	54	5 ह़िकायात	65
मेरे सबब फ़ुलां बरबाद हो गया !	54	(1) अपनी औक़ात याद रखता हूं	65
लोगों की तक्लीफ़ों का सबब मैं हूं !	55	(2) सारी सल्त़नत की क़ीमत एक गिलास पानी	66
तुम्हें तअ़ज्जुब नहीं होना चाहिये	55	(3) सालारे लश्कर को नसीह़त	67

उन्वान	सफ़हा नम्बर
(4) बुलन्दी चाहने वाले की रुस्वाई	67
(5) मेरे मक़ाम में कोई कमी तो नहीं आई	68
तकब्बुर के मज़ीद इलाज	68
(1) बारगाहे इलाही में हाज़िरी को याद रखिये	68
(2) दुआ कीजिये	69
(3) अपने उयूब पर नज़र रखिये	69
(4) नुक़्सानात पेशे नज़र रखिये	70
(5) आजिज़ी इख़्तियार कर लीजिये	70
ख़िन्ज़ीर से बदतर	70
हर एक के सर में लगाम	71
क्या येह भी मुझ से बेहतर हो सकता है!	71
आजिज़ी का एक पहलू	72
आजिज़ी किस हद तक की जाए ?	72
(6) सलाम में पहल कीजिये	72
सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी है	73
क़ुर्बे इलाही का हक़दार	73
आ'ला हज़रत की सलाम में पहल की आदते मुबा-रका	74
अमीरे अहले सुन्नत की आदते करीमा	74
(7) अपना सामान खुद उठाइये	75
(8) इन आ'माल को इख़्तियार कीजिये	75
बकरी की खाल पर बैठने की ब-र-कत	75
(9) स-दक़ा दीजिये	76
(10) हक़ बात तस्लीम कर लीजिये	76
(11) अपनी ग़-लती मान लीजिये	76
ग़-लती का ए'तिराफ़	76
अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का म-दनी अन्दाज़	77
(12) नुमायां हैसिय्यत के तालिब न बनिये	78
(13) घर के काम कीजिये	78
घर के काम काज करना सुन्नत है	79
चीज़ का मालिक उसे उठाने का ज़ियादा हक़दार है	79
लकड़ियों का गठ्ठा	79
कमाल में कोई कमी नहीं आती	80
इयाल दार को अपना सामान खुद उठाना मुनासिब है	80
सदरुश्शरीआ अपने घर के काम किया करते	80
(14) खुद मुलाक़ात के लिये जाइये	81
(15) ग़रीबों की दा'वत भी क़बूल कीजिये	81
ऐसी दा'वत रोज़ क़बूल करूं	81
ग़रीबों पर खुसूसी शफ़्क़त	84
(16) लिबास में सादगी इख़्तियार कीजिये	84
काश ! येह लिबास नर्म न होता	85
अमीरे अहले सुन्नत की सादगी	86
(17) म-दनी माहोल अपना लीजिये	87
ईमां की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में	88
क्या आप नेक बनना चाहते हैं ?	90
आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में बिशारत दी	91
(18) सात मुफ़ीद अवराद	92
इलाज के बा वुजूद इफ़ाक़ा न हो तो ?	93
5 मु-तफ़र्रिक़ म-दनी फूल	94
मआख़ज़ो मराजेअ	96

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

तकब्बुर

शैत़ान आप को बहुत रोकेगा मगर आप येह रिसाला पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप को अन्दाज़ा हो जाएगा कि शैत़ान आप को क्यूं नहीं पढ़ने दे रहा था

निफ़ाक़ व नार से नजात

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयान के तह़रीरी गुलदस्ते **''मैं सुधरना चाहता हूं''**[1] में मन्क़ूल है कि **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम सख़ावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं **: सरकारे दो आ़लम** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** ''जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक भेजा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर दस बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर सो बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है और क़ियामत के दिन उस को शहीदों के साथ रखेगा।'' **(اَلْقَوْلُ الْبَدِيع ص ۲۳۳ مؤسسة الريان بيروت)**

है सब दुआ़ओं से बढ़ कर दुआ़ दुरूदो सलाम
कि दफ़्अ़ करता है हर इक बला दुरूदो सलाम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 : येह रिसाला (41 स-फ़ह़ात) मक-त-बतुल मदीना से ह़ासिल कर के ज़रूर पढ़िये।

मैं इस से बेहतर हूं

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तख़्लीक़ (या'नी पैदाइश) के बा'द तमाम फ़िरिश्तों और इब्लीस (शैत़ान) को हुक्म दिया कि इन को **सज्दा** करें तो तमाम फ़िरिश्तों ने हुक्मे ख़ुदा वन्दी की ता'मील में सज्दा किया।[1] फ़िरिश्तों में से सब से पहले **सज्दा** करने वाले ह़ज़रते सय्यिदुना **जिब्राईल** फिर ह़ज़रते सय्यिदुना **मीकाईल**, ह़ज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इज़राईल फिर दीगर मुक़र्रब फ़िरिश्ते عَلَیْہِمُ السَّلَام थे।[2] येह सज्दा जुमुआ़ के रोज़ वक़्ते ज़वाल से अ़स्र तक किया गया।[3] मगर इब्लीस ने इन्कार कर दिया और **तकब्बुर** कर के काफ़िरों में से हो गया।[4] जब रब्बे आ'ला عَزَّوَجَلَّ ने इब्लीस से उस के इन्कार का सबब दरयाफ़्त फ़रमाया तो अकड़ कर कहने लगा :

اَنَا خَیْرٌ مِّنْهُ ؕ خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِیْنٍ ﴿۷۶﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** मैं इस से बेहतर हूं कि तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से पैदा किया।

(پ۲۳، سورۃ صٓ:۷۶)

इस से इब्लीस की फ़ासिद मुराद येह थी कि अगर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام आग से पैदा किये जाते और मेरे बराबर भी होते जब भी मैं इन्हें **सज्दा** न करता चे जाएकि इन से बेहतर हो कर इन को सज्दा करूं (مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ)। इब्लीस की इस सरकशी, ना फ़रमानी और **तकब्बुर** पर उस की ह़सीन सूरत ख़त्म हो गई और **बद शक्ल** रू सियाह हो गया, उस की नूरानिय्यत सल्ब कर ली गई।[5] **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُہٗ ने

۱: پ۱، البقرۃ:۳۴ ۲: روح البیان، البقرۃ، تحت الآیۃ ۳۴، ج۱، ص ۱۰۴
۳: تفسیر خزائن العرفان، البقرۃ، تحت الآیۃ ۳۴، ص ۱۰۹ ۴: پ۱، البقرۃ:۳۴
۵: تفسیر خزائن العرفان، ص ۸۲۴ ملخصاً

इब्लीस को अपनी बारगाह से धुतकारते हुए इर्शाद फ़रमाया :

فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝ وَّاِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْۤ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जन्नत से निकल जा कि तू रांधा (ला'नत किया) गया और बेशक तुझ पर मेरी ला'नत है क़ियामत तक।

(پ۲۳، سورۂ صٓ:۷۷،۷۸)

तकब्बुर ने कहीं का न छोड़ा !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया कि किस त़रह़ **तकब्बुर के** बाइ़स इब्लीस (या'नी शैत़ान) को अपने ईमान से हाथ धोने पड़े ! शैत़ान जिस का नाम पहले इ़ज़ाज़ील था,[1] इब्तिदा ही से सरकश व ना फ़रमान न था बल्कि उस ने **हज़ारों साल इ़बादत** की, जन्नत का **ख़ज़ान्ची** रहा,[2] येह **जिन्न** था[3] मगर अपनी इ़बादत व रियाज़त और इ़ल्मिय्यत के सबब **मुअ़ल्लिमुल म-लकूत** या'नी फ़िरिश्तों का **उस्ताज़** बन गया और इस क़दर मुक़र्रब था कि बारगाहे ख़ुदा वन्दी में मलाएका के पहलू ब पहलू ह़ाज़िर होता था । मगर चन्द घड़ियों के **तकब्बुर** ने उसे कहीं का न छोड़ा ! हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी की वजह से उस की बरसों की इ़बादतें अकारत (या'नी बेकार) और हज़ारों साल की रियाज़तें पामाल हो गईं, **ज़िल्लतो** रुस्वाई उस का मुक़द्दर बनी, हमेशा हमेशा के लिये **ला'नत** का त़ौक़ उस के गले पड़ गया और वोह जहन्नम के दाइमी (या'नी हमेशा हमेशा के) **अ़ज़ाब** का मुस्तह़िक़ ठहरा। **(اَلْاَمَان وَ الْحَفِيْظ)**

---

[1] : الجامع لاحكام القرآن،البقرة،تحت الآية ٣٤ ،ج١،ص٢٤٦

[2] : الجامع لاحكام القرآن،البقرة،تحت الآية ٣٤ ،ج١،ص٢٤٧

[3] : پارہ۱۵،الکھف،۵۰

तुम इसी ह़ालत पर रहना

मन्क़ूल है कि जब इब्लीस के मरदूद होने का वाक़िआ़ हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल और ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعلیہما الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ **रोने** लगे तो रब तआ़ला ने दरयाफ़्त किया (ह़ालां कि सब कुछ जानता है) कि "तुम क्यूं रोते हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! हम तेरी **ख़ुफ़्या तदबीर** से बे ख़ौफ़ नहीं हैं।" रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : "तुम इसी ह़ालत पर रहना।"

(الرسالة القشيرية،باب الخوف، ص١٦٦)

सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام की गिर्या व ज़ारी

नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام को देखा कि इब्लीसे ख़सीस के **अन्जामे बद** से इ़ब्रत गीर हो कर का'बए मुशर्रफ़ा के पर्दे से लिपट कर निहायत गिर्या व ज़ारी के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में येह **दुआ़** कर रहे हैं : "**اِلٰهِی وَسَیِّدِیْ لَا تُغَیِّرْ اِسْمِیْ وَلَا تُبَدِّلْ جِسْمِیْ**" या'नी ऐ मेरे अल्लाह ! ऐ मेरे मालिक عَزَّوَجَلَّ ! कहीं मेरा नाम नेकों की फ़ेहरिस्त से न निकाल देना और कहीं मेरा जिस्म अहले अ़ता के ज़ुमरे से निकाल कर अहले ग़ज़ब के गुरौह में शामिल न फ़रमा देना।" (منهاج العابدين ، ص١٥٨)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

येह इ़ब्रत की जा है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा सोचिये कि **तकब्बुर** किस क़दर ख़त़रनाक **बात़िनी मरज़** है जिस की वजह से "**मुअ़ल्लिमुल म-लकूत** या'नी फ़िरिश्तों के उस्ताज़" का रुत्बा पाने वाले इब्लीस (शैत़ान) ने **ख़ुदाए रह़मान** عَزَّوَجَلَّ की **ना फ़रमानी** की और अपने

मक़ाम व मन्सब से महरूम हो कर **जहन्नमी** क़रार पाया । इब्लीस का येह अन्जाम देख कर जब ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल व मकाईल عَلَيْهِمَا السَّلَام जैसे मुक़र्रब व मा'सूम फ़िरिश्ते **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ से अश्कबार हो जाएं और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में आ़फ़िय्यत व सलामती की मुनाजात (या'नी दुआ़एं) करना शुरूअ़ कर दें तो हम जैसे इ़स्यां शिआ़रों (या'नी गुनहगारों) को तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर** से ब द-र-जए औला डरना चाहिये !

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा
मैं थर थर रहूं कांपता या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तकब्बुर का इ़ल्म सीखना फ़र्ज़ है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस जदीद साइन्सी दौर में मीडिया (ज़राइए़ इब्लाग़) की वुस्अ़तों ने हर दूसरे शख़्स को मा'लूमात का ह़रीस बना दिया है, आज हम अपने इर्द गिर्द, अड़ोस पड़ोस, मह़ल्ले और गाउं, शहर और मुल्क, ख़ित्ते बल्कि सारी दुन्या की **मा'लूमात** ह़ासिल करने का शौक़ तो रखते हैं कि फ़ुलां मुल्क में इलेक्शन हुए तो किस सियासी पार्टी को अक्सरिय्यत ह़ासिल हुई ! फ़ुलां मेच कौन सी टीम जीती ! फ़ुलां जगह ज़ल्ज़ला या तूफ़ान आया तो कितने लोग हलाक हुए ! फ़ुलां मुल्क का सद्र, या फ़ुलां सूबे का गवर्नर कौन है ! वग़ैरा वग़ैरा मगर अफ़्सोस इस के मुक़ाबले में हमारी दीनी मा'लूमात उ़मूमन सत्ही नौइ़य्यत की होती हैं फिर उन में से दुरुस्त कितनी होती हैं ? कोई साह़िबे इ़ल्म हमारा इम्तिह़ान ले तो पता चले । याद रखिये ! दुन्यवी मा'लूमात की कसरत पर हमें आख़िरत में कोई जज़ा मिलेगी न कम होने पर कोई सज़ा ! अलबत्ता ब क़दरे ज़रूरत दीनी मा'लूमात न होना नुक़्साने आख़िरत

का बाइ़स है क्यूं कि इस जहाने फ़ानी (या'नी दुन्या) में की गई नेकियां जहाने आख़िरत की आबाद कारी जब कि गुनाह बरबादी का सबब हैं और नेकियों और गुनाहों की पहचान के लिये इ़ल्मे दीन का होना बहुत ज़रूरी है। जहन्नम में ले जाने वाले गुनाहों में से एक **तकब्बुर** भी है जिस का इ़ल्म सीखना **फ़र्ज़** है चुनान्चे **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** जिल्द 23 सफ़ह़ा 624 पर लिखते हैं : "**मुह़र्रमाते बात़िनिय्या** (या'नी बात़िनी मम्नूआ़त म-सलन) **तकब्बुर** व **रिया** व **उ़ज्ब** व ह़सद वग़ैरहा और उन के **मुआ़-लजात** (या'नी इ़लाज) कि इन का इ़ल्म (या'नी जानना) भी हर मुसल्मान पर अहम्म **फ़राइ़ज़ से है।**" (فتاوی رضویہ مخرجہ، ج۲۳، ص٦٢٤)

इस लिये हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को चाहिये कि पहले **तकब्बुर** की ता'रीफ़, तबाह कारियां, अक़्साम, अस्बाब, अ़लामत और इ़लाज वग़ैरा के बारे में मुकम्मल मा'लूमात ह़ासिल कर के दियानत दारी के साथ अपना **मुह़ा-सबा** करे फिर अगर इस **बात़िनी गुनाह** में गरिफ़्तार होने का एह़सास हो तो हाथों हाथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में **तौबा** करे और **इ़लाज** के लिये भरपूर कोशिशें शुरूअ़ कर दे।

तकब्बुर से बचने की फ़ज़ीलत

मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जो शख़्स **तकब्बुर**, ख़यानत और दैन (या'नी क़र्ज़ वग़ैरा) से बरी हो कर मरेगा वोह **जन्नत** में दाख़िल होगा।"

(جامع الترمذی، کتاب السیر، باب ماجاء فی الغلول، الحدیث ١٥٧٨، ج٣، ص٢٠٨)

इस रिसाले में क्या है ?

इस रिसाले में **तकब्बुर** की मा'लूमात को क़दरे आसान अन्दाज़ में उ़न्वानात के तह़्त ह़वाला जात के साथ पेश करने की कोशिश की गई है ताकि कम इ़ल्म भी इस से फ़ाएदा ह़ासिल कर सकें, फिर भी **इ़ल्म** बहुत मुश्किल चीज़ है येह मुम्किन नहीं कि इ़ल्मी दुश्वारियां बिल्कुल जाती रहें, जो बात समझ में न आए, समझने के लिये उ़-लमाए किराम دامت فیوضھم से रुजूअ़ कीजिये । **तकब्बुर** से नजात का जज़्बा पाने के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा **मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के केसिट बयानात ''मग़रूर बादशाह'', ''तकब्बुर किसे कहते हैं ?'', ''तकब्बुर की अ़लामात'', ''तकब्बुर के अस्बाब'', और मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा व निगराने पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना ह़ाजी मुह़म्मद शाहिद अ़त्तारी سَلَّمَهُ الْبَارِی का बयान ''बात़िनी अमराज़ का इ़लाज'' सुनना भी बेह़द मुफ़ीद है ।

इस अहम रिसाले को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़िये बल्कि दीगर इस्लामी भाइयों को भी पढ़ने की तरग़ीब दे कर नेकी की दा'वत को आ़म करने का सवाब कमाइये । **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ है कि हमें ''**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**'' करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल और ''म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए ।''

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن.صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शो'बए इस्लाही कुतुब

(मजलिसे अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या)

6 **ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम सि.** 1430 **हि.**

ब मुत़ाबिक़ 26 **अक्तूबर सि.** 2009 **ई.**

तकब्बुर किसे कहते हैं ?

ख़ुद को अफ़्ज़ल, दूसरों को ह़क़ीर जानने का नाम तकब्बुर है। चुनान्चे **रसूले अकरम**, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''اَلْكِبْرُ بَطَرُ الْحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ'' या'नी तकब्बुर ह़क़ की मुख़ा-लफ़त और लोगों को ह़क़ीर जानने का नाम है।''

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر و بیانه، الحدیث: ۹۱، ص ٦١)

इमाम राग़िब इस्फ़हानी علیه رحمة الله الغنی लिखते हैं : ذٰلِكَ اَنْ يَّرَى الْاِنْسَانُ نَفْسَهٗ اَكْبَرَ مِنْ غَيْرِهٖ या'नी तकब्बुर येह है कि इन्सान अपने आप को दूसरों से अफ़्ज़ल समझे। (المُفرَدات للرّاغب ص٦٩٧)

मदीना : जिस के दिल में **तकब्बुर** पाया जाए उसे ''**मु-तकब्बिर**'' कहते हैं।

''मक्का'' के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से तकब्बुर की 3 अक़्साम

(1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मुक़ाबले में तकब्बुर

तकब्बुर की येह क़िस्म **कुफ़्र** है,[1] जैसे फ़िरऔ़न का **तकब्बुर** कि उस ने कहा था :

اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ﴿۲۴﴾ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ﴿۲۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मैं तुम्हारा सब से ऊंचा रब हूं तो अल्लाह ने उसे दुन्या व आख़िरत दोनों के अ़ज़ाब में पकड़ा। (پ ۳۰، النّٰزعٰت: ۲۴)

फ़िरऔ़न डूब मरा

फ़िरऔ़न की हिदायत के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा

[1] : مرقاة المفاتیح، کتاب الاداب، باب الغضب و الکبر ج۸، ص۸۲۸

कलीमुल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना हारून عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को भेजा मगर उस ने इन दोनों को झुटलाया तो रब عَزَّوَجَلَّ ने उसे और उस की क़ौम को **दरियाए नील** में ग़रक़ कर दिया। (الحدیقۃ الندیۃ، ج۱، ص۵٤۹)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 853 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल**" सफ़ह़ा 132 पर है : मुफ़स्सिरीने किराम علیہم رحمۃ اللّٰہِ السّلام फ़रमाते हैं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने फ़िरऔ़न को मरे हुए बैल की त़रह़ दरिया के किनारे पर फेंक दिया** ताकि वोह बाक़ी मांदा बनी इसराईल और दीगर लोगों के लिये इ़ब्रत का निशान बन जाए और उन पर येह बात वाज़ेह़ हो जाए कि जो शख़्स ज़ालिम हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जनाब में **तकब्बुर** करता हो उस की पकड़ इस त़रह़ होती है कि उसे ज़िल्लत व इहानत की पस्ती में फेंक दिया जाता है।"

(الزواجر عن اقتراف الکبائر(عربی)، ج۱، ص۷۱)

नमरूद की मच्छर के ज़रीए हलाकत

नमरूद भी **तकब्बुर** की इसी क़िस्म का शिकार हुवा, इस ने ख़ुदाई का दा'वा किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیۡہِ السَّلَام عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को नमरूद की त़रफ़ भेजा तो उस ने आप को झुटलाया ह़त्ता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर **तकब्बुर** करते हुए कहने लगा : "मैं आस्मान के रब को क़त्ल कर दूंगा (مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) और इस इरादे से आस्मान की त़रफ़ तीर बरसाए, जब तीर ख़ून आलूदा हो कर वापस ज़मीन पर आ गिरे तो उस ने अपनी जहालत, बुग़्ज़ व अ़दावत और कुफ़्र की शामत की वजह से गुमान किया कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ "उस ने आस्मान के रब को क़त्ल कर दिया।" ह़त्ता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नमरूद की त़रफ़ एक **मच्छर** को भेजा जो नाक के ज़रीए उस के दिमाग़ में घुस गया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस मग़रूर को एक मा'मूली

मच्छर के ज़रीए हलाक फ़रमा दिया।" (الحديقة الندية، ج١، ص٥٤٩)

(2) अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त के रसूलों के मुक़ाबले में

इस की सूरत येह है कि **तकब्बुर,** जहालत और बुग़्ज़ व अ़दावत की बिना पर **रसूल** की पैरवी न करना या'नी ख़ुद को इ़ज़्ज़त वाला और बुलन्द समझ कर यूं तसव्वुर करना कि आ़म लोगों जैसे एक इन्सान का हुक्म कैसे माना जाए, जैसा कि बा'ज़ कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में हक़ारत से कहा था :

اَهٰذَا الَّذِیْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्या येह हैं जिन को **अल्लाह** ने **रसूल** बना कर भेजा ? (پ١٩، الفرقان:٤١)

और येह भी कहा था :

لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْیَتَیْنِ عَظِیْمٍ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क्यूं न उतारा गया येह क़ुरआन इन दो शहरों के किसी बड़े आदमी पर ? (پ٢٥، الزخرف:٣١)

(الحديقة الندية، ج١، ص٥٥٠)

नबी के मुक़ाबले में भी तकब्बुर **कुफ़्र** है। (مراة المناجيح، ج٦، ص٦٥٥)

(3) बन्दों के मुक़ाबले में

या'नी **अल्लाह** व **रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इलावा मख़्लूक़ में से किसी पर **तकब्बुर** करना, वोह इस त़रह़ कि अपने आप को बेहतर और दूसरे को ह़क़ीर जान कर उस पर बड़ाई चाहना और मुसावात (या'नी बाहम बराबरी) को ना पसन्द करना, येह सूरत अगर्चे पहली दो सूरतों से कमतर है मगर इस का गुनाह भी बहुत बड़ा है क्यूं कि किब्रियाई और अ़-ज़मत बादशाहे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ

ही के लाइक़ है न कि आ़जिज़ और कमज़ोर बन्दे के।

(احیاء العلوم،ج٣،ص٤٢٥ملخصًا)

तकब्बुर करने वाले की मिसाल

तकब्बुर करने वाले की मिसाल ऐसी है कि कोई गु़लाम बग़ैर इजाज़त बादशाह का ताज पहन कर उस के शाही तख़्त पर बिराजमान हो जाए, तो जिस त़रह़ येह ग़ुलाम बादशाह की त़रफ़ से सख़्त सज़ा पाएगा बिल्कुल इसी त़रह़ "सि-फ़ते किब्र" में शिर्कत की मज़्मूम कोशिश करने वाला शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से सज़ा का मुस्तह़िक़ होगा। चुनान्चे नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : **रब** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है : "किब्रियाई मेरी चादर है, लिहाज़ा जो मेरी चादर के मुआ़-मले में मुझ से झगड़ेगा मैं उसे पाश पाश कर दूंगा।"

(المستدرك للحاكم ،كتاب الايمان، باب اهل الجنة المغلوبون......الخ،الحديث:٢١٠،ج١،ص٢٣٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रब तआ़ला का किब्रियाई को अपनी चादर फ़रमाना हमें समझाने के लिये है कि जैसे एक चादर को दो नहीं ओढ़ सकते, यूंही अ़-ज़्-मतो किब्रियाई सिवाए मेरे दूसरे के लिये नहीं हो सकती। (ماخوذازمراۃالمناجیح،ج٦،ص٦٥٩)

इन्सान की ह़ैसिय्यत ही क्या है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन्सान की पैदाइश बदबूदार नुत़फ़े (या'नी गन्दे क़त़रे) से होती है अन्जामे कार सड़ा हुवा मुर्दा है और इस क़दर बेबस है कि अपनी भूक, प्यास, नींद, ख़ुशी, ग़म, याद दाश्त, बीमारी या मौत पर इसे कुछ इख़्तियार नहीं, इस लिये इसे चाहिये कि अपनी अस्लिय्यत, ह़ैसिय्यत और औक़ात को कभी फ़रामोश न करे, वोह इस दुन्या में तरक़्क़ियों की मन्ज़िलें त़ै करता हुवा कितने ही बड़े मक़ाम व मर्तबे पर क्यूं न पहुंच जाए, ख़ालिक़े कौनो मकां عَزَّوَجَلَّ के सामने इस की ह़ैसिय्यत कुछ भी नहीं है, साह़िबे अ़क़्ल इन्सान तवाज़ोअ़ और आ़जिज़ी

का चलन इख़्तियार करता है और येही चलन इस को दुन्या में बड़ाई अ़ता करता है वरना इस दुन्या में जब भी किसी इन्सान ने फ़िरऔनिय्यत, क़ारूनिय्यत और नमरूदिय्यत वाली राह पकड़ी है बसा अवक़ात **अल्लाह** तआ़ला ने इसे दुन्या ही में ऐसा ज़लीलो ख़्वार किया है कि उस का नाम मक़ामे ता'रीफ़ में नहीं बतौ़रे मज़म्मत लिया जाता है। लिहाज़ा अ़क़्लो फ़हम का तक़ाज़ा येह है कि इस दुन्या में ऊंची परवाज़ के लिये इन्सान जीते जी पैवन्दे ज़मीन हो जाए और आ़जिज़ी व इन्किसारी को अपना ओढ़ना बिछोना बना ले फिर देखिये कि **अल्लाहु** रब्बुल इ़ज़्ज़त उस को किस त़रह़ इ़ज़्ज़त व अ़-ज़मत से नवाज़ता है और उसे दुन्या में मह़बूबिय्यत और मक़्बूलिय्यत का वोह आ'ला मक़ाम अ़ता करता है जो उस के फ़ज़्लो करम के बग़ैर मिल जाना मुम्किन ही नहीं है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आ़शिक़ाने रसूल के मीठे बोल की ब-रकात

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ ''फ़ैज़ाने सुन्नत'' जिल्द 2 के 499 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल बाब, ''**ग़ीबत की तबाह कारियां**'' सफ़ह़ा 223 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : शहर क़ुसूर (पंजाब, पाकिस्तान) के एक नौ जवान इस्लामी भाई की तह़रीर बित्तसर्रुफ़ पेश करता हूं : ''मैं उन दिनों मेट्रिक का त़ालिबे इ़ल्म था, बुरी सोह़बत के बाइ़स ज़िन्दगी गुनाहों में बसर हो रही थी, मिज़ाज बेह़द ग़ुसीला था और बद तमीज़ी की आ़दते बद इस ह़द तक पहुंच चुकी थी कि वालिद साह़िब कुजा दादाजान और दादीजान के सामने भी कैंची की त़रह़ ज़बान चलाता। एक रोज़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का एक म-दनी क़ाफ़िला हमारे मह़ल्ले की मस्जिद में आ पहुंचा, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का करना ऐसा हुवा कि मैं **आ़शिक़ाने रसूल** से मुलाक़ात के लिये पहुंच गया। एक इस्लामी भाई

ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मुझे **दर्स** में शिर्कत की दा'वत पेश की, उन के **मीठे बोल** ने मुझ पर ऐसा असर किया कि मैं उन के साथ बैठ गया। उन्हों ने **दर्स** के बा'द इन्तिहाई मीठे अन्दाज़ में मुझे बताया कि चन्द ही रोज़ बा'द ''सह्राए मदीना'' मदी-नतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में **दा'वते इस्लामी का तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** हो रहा है आप भी शिर्कत कर लीजिये। उन के **दर्स** ने मुझ पर बहुत अच्छा असर किया था लिहाज़ा मैं इन्कार न कर सका। यहां तक कि मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ (सह्राए मदीना, मुलतान) में ह़ाज़िर हो गया। वहां की रौनकें और ब-र-कतें देख कर मैं ह़ैरान रह गया, इज्तिमाअ़ में होने वाले आख़िरी बयान **''गाने बाजे की होल नाकियां''** सुन कर मैं थर्रा उठा और आंखों से आंसू जारी हो गए। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं गुनाहों से तौबा कर के उठा और दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गया। मेरी **म-दनी माह़ोल** से वाबस्तगी से हमारे घर वालों ने इत्मीनान का सांस लिया, दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से मुझ जैसे बिगड़े हुए बद अख़्लाक़ और ख़स्ता ख़राब नौ जवान में म-दनी इन्क़िलाब से मु-तअस्सिर हो कर मेरे बड़े भाई ने भी दाढ़ी मुबारक रखने के साथ साथ इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया। मेरी एक ही बहन है। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी इक्लौती बहन ने भी **म-दनी बुरक़अ़** पहन लिया, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर का हर फ़र्द सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم का मुरीद हो गया। और उस इन्फ़िरादी कोशिश करने वाले मेरे मोह़सिन इस्लामी भाई के मीठे बोल की ब-र-कत से मुझ पर **अल्लाहु** आ'ज़म عَزَّوَجَلَّ ने ऐसा करम फ़रमाया कि मैं ने **क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़** करने की सआ़दत ह़ासिल कर ली और **दर्से निज़ामी** (आ़लिम कोर्स) में दाख़िला ले लिया और येह बयान देते वक़्त

द-र-**जए सालिसा** या'नी तीसरी क्लास में पहुंच चुका हूं। اَلْحَمْدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों के तअ़ल्लुक़ से **अ़लाक़ाई क़ाफ़िला ज़िम्मादार** हूं। मेरी निय्यत है कि اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सि. 1427 हि. से यकमुश्त 12 **माह के लिये म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करूंगा।''

दिल पे गर ज़ंग हो, घर का घर तंग हो, होगा सब का भला, क़ाफ़िले में चलो

ऐसा फ़ैज़ान हो, हिफ़्ज़ क़ुरआन हो, कर के हिम्मत ज़रा, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

''पनाहे ख़ुदा'' के छ हुरूफ़ की निस्बत से तकब्बुर के 6 नुक़्सानात

इस बातिनी गुनाह के कसीर दुन्यवी व उख़्वी नुक़्सानात हैं, जिन में से 6 येह हैं :

(1) अल्लाह तआ़ला का ना पसन्दीदा बन्दा

रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ **तकब्बुर** करने वालों को पसन्द नहीं फ़रमाता जैसा कि सूरए **नह्ल** में इर्शाद होता है :

اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِیْنَ ﴿۲۳﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह मग़रूरों को पसन्द नहीं फ़रमाता।

(پ١٤، النحل:٢٣)

शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मु-तकब्बिरीन (या'नी मग़रूरों) और इतरा कर चलने वालों को ना पसन्द फ़रमाता है।''

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، الحدیث:٧٧٢٧، ج٣، ص٢١٠)

(2) म-दनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मु-तकब्बिर के लिये इज़्हारे नफ़रत

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''बेशक क़ियामत के दिन तुम में से मेरे सब से नज़्दीक और पसन्दीदा शख़्स वोह होगा जो तुम में से अख़्लाक़ में सब से ज़ियादा अच्छा होगा और क़ियामत के दिन मेरे नज़्दीक सब से क़ाबिले नफ़रत और मेरी मजलिस से दूर वोह लोग होंगे जो वाहियात बकने वाले, लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वाले और **मु-तफ़ैहिक़** हैं।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! बेहूदा बक्वास बकने वालों और लोगों का मज़ाक़ उड़ाने वालों को तो हम ने जान लिया मगर **मु-तफ़ैहिक़** कौन हैं ?'' तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''इस से मुराद हर **तकब्बुर** करने वाला शख़्स है।''

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلة ، الحدیث:۲۰۲۵،ج۳،ص۴۱۰)

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम
कि जिस को तूने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

(3) बद तरीन शख़्स

तकब्बुर करने वाले को बद तरीन शख़्स क़रार दिया गया है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं कि हम दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक जनाज़े में शरीक थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''क्या मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बद तरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह बद अख़्लाक़ और **मु-तकब्बिर** है, क्या मैं तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सब से बेहतरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह कमज़ोर और ज़ईफ़ समझा जाने वाला बोसीदा लिबास पहनने वाला

शख़्स है लेकिन अगर वोह किसी बात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाए ।''

(المسندللامام احمد بن حنبل، الحديث: ٢٣٥١٧، ج٩، ص١٢٠)

(4) क़ियामत में रुस्वाई

तकब्बुर करने वालों को क़ियामत के दिन ज़िल्लतो रुस्वाई का सामना होगा, चुनान्चे दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह्रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''क़ियामत के दिन **मु-तकब्बिरीन** को इन्सानी शक्लों में च्यूंटियों की मानिन्द उठाया जाएगा, हर जानिब से उन पर ज़िल्लत त़ारी होगी, उन्हें जहन्नम के ''**बूलस**'' नामी क़ैदख़ाने की त़रफ़ हांका जाएगा और बहुत बड़ी आग उन्हें अपनी लपेट में ले कर उन पर ग़ालिब आ जाएगी, उन्हें ''**त़ी-नतुल खबाल** या'नी जहन्नमियों की पीप'' पिलाई जाएगी ।''

(جامع الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب ماجاء فی شدة .....الخ،الحديث: ٢٥٠٠، ج٤، ص٢٢١)

(5) टख़्ने से नीचे पाजामा लटकाना

रह़मते इलाही से मह़रूम होने वालों में मु-तकब्बिर भी शामिल होगा, जैसा कि **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''जो **तकब्बुर** की वजह से अपना तहबन्द लटकाएगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस पर नज़रे रह़मत न फ़रमाएगा ।''

(صحيح البخاری، کتاب اللباس، باب من جرثوبهٗ من الخيلاء، الحديث: ٥٧٨٨، ج٤، ص٤٦)

म-दनी फूल : आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان फ़रमाते हैं : पाइचों का का'बैन (या'नी दोनों टख़्नों) से नीचा होना जिसे अ़-रबी में ''**इस्बाल**'' कहते हैं अगर बराहे उ़जुब व तकब्बुर (या'नी ख़ुद पसन्दी और तकब्बुर की वजह से) है तो क़त़्अ़न

मम्नूअ़ व **ह़राम** है और उस पर वईदे शदीद वारिद, और अगर ब वज्हे **तकब्बुर** नहीं तो हुक्मे ज़ाहिर अह़ादीस मर्दों को भी जाइज़ है। मगर उ़-लमा दर सूरते अ़-दमे तकब्बुर (या'नी तकब्बुर के तौ़र पर न होने की सूरत में) हुक्मे कराहते तन्ज़ीही देते हैं। बिल जुम्ला (या'नी ख़ुलासा येह कि) **इस्बाल** अगर बराहे उ़ज्ब व तकब्बुर है, ह़राम वरना मक्रूह और ख़िलाफ़े औला।

(ملخصاً از فتاوی رضویہ، ج۲۲، ص۱۶۴، ۱۶۷)

(6) जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस के दिल में राई के दाने जितना (या'नी थोड़ा सा) भी **तकब्बुर** होगा वोह जन्नत में दाख़िल न होगा।" (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانہ، الحدیث:۱۴۷، ص۶۰)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی लिखते हैं : जन्नत में दाख़िल न होने से मुराद येह है कि **तकब्बुर** के साथ कोई जन्नत में दाख़िल न होगा बल्कि **तकब्बुर** और हर बुरी ख़स्लत से अ़ज़ाब भुगतने के ज़रीए़ या अल्लाह तआ़ला के अ़फ़्वो करम से पाक व साफ़ हो कर जन्नत में दाख़िल होगा।

(مرقاۃ المفاتیح، کتاب الآداب، باب الغضب والکبر، ج۸، ص۸۲۸، ۸۲۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस तकब्बुर का क्या ह़ासिल !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़रा सोचिये कि इस **तकब्बुर** का क्या ह़ासिल ! महज़ लज़्ज़ते नफ़्स, वोह भी चन्द लम्ह़ों के लिये ! जब कि इस के नतीजे में **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नाराज़ी, मख़्लूक़ की बेज़ारी, मैदाने मह़शर में ज़िल्लतो रुस्वाई,

रब عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और इन्आ़माते जन्नत से मह़रूमी और जहन्नम का रिहाइशी बनने जैसे बड़े बड़े नुक़्सानात का सामना है ! अब फ़ैसला हमारे हाथ में है कि चन्द लम्ह़ों की लज़्ज़त चाहिये या हमेशा के लिये जन्नत ! मैदाने मह़शर में इ़ज़्ज़त चाहिये या ज़िल्लत ! यक़ीनन हम ख़सारे (या'नी नुक़्सान) में नहीं रहना चाहेंगे तो हमें चाहिये कि अपने अन्दर इस म-रज़े **तकब्बुर** की मौजूदगी का पता चलाएं और इस के **इ़लाज** के लिये कोशां हो जाएं। हर बात़िनी मरज़ की कुछ न कुछ अ़लामात होती हैं, आइये ! सब से पहले हम **तकब्बुर** की अ़लामात के बारे में जानते हैं फिर सन्जीदगी से अपना मुह़ा-सबा करने की कोशिश करते हैं । याद रहे ! **तकब्बुर** की मा'लूमात ह़ासिल करने का मक़्सद अपनी **इस्लाह़** हो न कि दीगर मुसल्मानों के उ़यूब जानने की जुस्त-जू, **ख़बरदार !** अपनी नाक़िस मा'लूमात की बिना पर किसी भी **मुसल्मान** पर ख़्वाह म ख़्वाह **मु-तकब्बिर** होने का हुक्म न लगाइये, **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : लाखों मसाइल व अह़काम, निय्यत के फ़र्क़ से **तब्दील** हो जाते हैं । (فتاوی رضویہ، ج۸، ص۹۸)

येह बात भी ज़ेह़न में रहे कि इन अ़लामात को मह़ज़ एक मर्तबा पढ़ना और सरसरी त़ौर पर अपना जाएज़ा ले लेना ही काफ़ी नहीं क्यूं कि नफ़्सो शैत़ान कभी नहीं चाहेंगे कि हम इन अ़लामात को अपने अन्दर तलाश कर के **तकब्बुर** का इ़लाज करने में काम्याब हो जाएं, लिहाज़ा ! **अ़लामाते तकब्बुर** को बार बार पढ़ कर ख़ूब अच्छी त़रह़ ज़ेह़न नशीन कर लीजिये फिर अपना मुसल्सल मुह़ा-सबा जारी रखिये तो काम्याबी की राह हमवार हो जाएगी, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''तकब्बुर जहन्नम में ले जाएगा'' के 19 हुरूफ़ की निस्बत से तकब्बुर की 19 अ़लामात

पहली अ़लामत : इस बात को पसन्द करना कि लोग मुझे देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाएं ताकि दूसरों पर मेरी शानो शौकत का इज़्हार हो। (الحديقة الندية، ج١، ص٥٨٣)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

म-दनी फूल : अगर कोई लोगों के खड़े होने को इस लिये पसन्द करता है कि कम इल्म (जाहिल) लोगों को उस की हैसिय्यत का इल्म हो जाए और वोह दीन के मुआ़-मले में उस की नसीह़त को क़बूल करें, **तकब्बुर** का नामो निशान भी दिल में न हो तो ऐसा शख़्स मु-तकब्बिर नहीं है क्यूं कि आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है, हर आदमी के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की और निय्यतों का ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है। मगर येह बहुत मुश्किल काम है लिहाज़ा ! ऐसे शख़्स को अपने दिल पर एक सो बारह बार ग़ौर कर लेना चाहिये ऐसा न हो कि नफ़्सो शैत़ान उसे धोके में मुब्तला कर के हलाकत के जंगल में पहुंचा दें। (الحديقة الندية، ج١، ص٥٨٣)

दूसरी अ़लामत : येह चाहना कि इस्लामी भाई मेरी ता'ज़ीम की ख़ातिर मेरे सामने बा अदब खड़े रहें ताकि लोगों में मेरा मक़ाम व मर्तबा ज़ाहिर हो। (ایضاً)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले

सय्यिदुल मुर-सलीन, ख़ा-तमुन्नबिय्यीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''जिस की येह ख़ुशी हो कि लोग मेरी ता'ज़ीम के लिये खड़े रहें, वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बनाए।''

(جامع الترمذي، كتاب الادب، الحديث: ٢٧٦٤، ج٤، ص٣٤٧)

अ़-जमिय्यों की त़रह़ खड़े न रहा करो

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि साह़िबे कु़रआने मुबीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अ़सा पर टेक लगा कर बाहर तशरीफ़ लाए। हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये खड़े हो गए। इर्शाद फ़रमाया : ''इस त़रह़ न खड़े हुवा करो जैसे **अ़-जमी** खड़े हुवा करते हैं कि इन के बा'ज़, बा'ज़ की ता'ज़ीम करते हैं।''

(سنن أبي داود، كتاب الادب، الحديث ٥٢٣٠، ج٤،ص٤٥٨)

बयान कर्दा ह़दीस की तशरीह़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 113 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस ह़दीस के तह़्त लिखते हैं : या'नी अ़-जमिय्यों का खड़े होने में जो त़रीक़ा है वोह क़बीह़ व मज़मूम (या'नी बुरा) है, इस त़रह़ खड़े होने की **मुमा-न-अ़त** है, वोह येह है कि उ-मरा बैठे हुए होते हैं और कुछ लोग बर वज्हे ता'ज़ीम उन के क़रीब खड़े रहते हैं। दूसरी सूरत अ़-दमे जवाज़ की वोह है कि वोह ख़ुद पसन्द करता हो कि मेरे लिये लोग खड़े हुवा करें और कोई खड़ा न हो तो बुरा माने जैसा कि हिन्दूस्तान में अब भी बहुत जगह रवाज है कि अमीरों, रईसों, ज़मीन दारों के लिये उन की रिआ़या खड़ी होती है, न खड़ी हो तो ज़दो कोब तक नौबत आती है। ऐसे ही **मु-तकब्बिरीन** व **मु-तजब्बिरीन** (या'नी तकब्बुर और ज़ुल्म करने वालों) के मु-तअ़ल्लिक़ ह़दीस में वई़द आई है और अगर उन की त़रफ़ से येह न हो बल्कि येह खड़ा होने वाला उस को मुस्तह़िक़्क़े ता'ज़ीम समझ कर सवाब के लिये खड़ा होता है या तवाज़ोअ़ के त़ौर पर किसी के लिये खड़ा होता है तो येह ना

जाइज़ नहीं बल्कि **मुस्तहब** है । (بہارِ شریعت، حصہ ۱۶، ص ۱۱۳)

अपने सरदार के पास उठ कर जाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि जब बनी क़ुरैज़ा अपने क़ल्ए़ से ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हुक्म पर उतरे, हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के पास आदमी भेजा और वोह वहां से क़रीब में थे । जब मस्जिद के क़रीब आ गए, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अन्सार से फ़रमाया : "अपने सरदार के पास उठ कर जाओ ।" (صحیح البخاري، کتاب الجهاد، باب اذا نزل العدو .....الخ،الحدیث ۳۰۴۳،ج۲،ص۳۲۲)

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان खड़े हो कर ता'ज़ीम किया करते

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में बैठ कर हम से बातें करते जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े होते तो हम भी खड़े हो जाते और उतनी देर खड़े रहते कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को देख लेते कि बा'ज़ अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के मकान में तशरीफ़ ले गए । (شعب الإیمان، باب في مقاربة.....الخ، الحدیث ۸۹۳۰، ج۶، ص۴۶۷)

तीसरी अ़लामत : कहीं आते जाते वक़्त येह ख़्वाहिश रखना कि मेरा कोई शागिर्द या मुरीद या अ़क़ीदत मन्द या कोई रफ़ीक़ बराबर या पीछे पीछे चले ताकि लोग मुझे मुअ़ज़्ज़ज़ समझें । (الحدیقة الندیة، ج۱، ص۵۸۴)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

दूरी में इज़ाफ़ा होता रहता है

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عنہ फ़रमाते हैं : "जब तक किसी आदमी के **पीछे** चलने वाले हों अल्लाह तआ़ला से उस की **दूरी** में इज़ाफ़ा होता रहता है।"

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم الکبر و العجب، ج٣، ص٤٣٤)

म-दनी फूल : कभी इन्सान की आ़दत में येह शामिल होता है कि चलने में उस के साथ कोई न कोई ज़रूर हो इस लिये कि तन्हा जाने में उसे वह़शत होती है या अकेले जाने में दुश्मन का ख़ौफ़ है कि वोह अज़िय्यत व नुक़्सान पहुंचाएगा तो ऐसी सूरत में किसी को साथ ले लेना **तकब्बुर** में दाख़िल नहीं।

(الحدیقة الندیة، ج١، ص٥٨٤)

चौथी अ़लामत : किसी से मुलाक़ात के लिये खु़द चल कर जाने में ज़िल्लत समझना, इस बात को पसन्द करना कि दूसरा मुझ से मिलने आए। (ایضاً)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

म-दनी फूल : अगर कोई अपनी दीनी या दुन्यावी मसरूफ़िय्यात के सबब लोगों से मुलाक़ात करने नहीं जाता या इस लिये नहीं मिलता कि **ग़ीबत** वग़ैरा गुनाहों में मुब्तला होने का अन्देशा है या सामने वाले पर उस की मुलाक़ात गिरां गुज़रेगी तो ऐसा करना **तकब्बुर** नहीं और इन वुजूहात की बिना पर मुलाक़ात न करना मज़मूम (या'नी क़ाबिले मज़म्मत) भी नहीं है। (ایضاً)

पांचवीं अ़लामत : ब ज़ाहिर किसी कमतर इस्लामी भाई का बराबर आ कर बैठ जाना इस लिये ना गवार गुज़रना कि मैं इस से अफ़्ज़ल हूं, येह भी तकब्बुर में दाख़िल है। (الحدیقة الندیة، ج١، ص٥٨٥)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

जब ह़जाम बराबर आ कर बैठा.....

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मौलाना सय्यिद **अय्यूब अ़ली** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का बयान है कि एक साह़िब जिन का नाम मुझे याद नहीं आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा करते थे और **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت भी कभी कभी उन के यहां तशरीफ़ ले जाया करते थे। एक मर्तबा हुज़ूर (आ'ला ह़ज़रत) उन के यहां तशरीफ़ फ़रमा थे कि उन के मह़ल्ले का एक बेचारा ग़रीब मुसल्मान टूटी हुई पुरानी चारपाई पर जो सेह़न के कनारे पड़ी थी झिजक्ते हुए बैठा ही था कि साह़िबे ख़ाना ने निहायत कड़वे तेवरों से उस की त़रफ़ देखना शुरूअ़ किया यहां तक कि वोह नदामत से सर झुकाए उठ कर चला गया। **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت को साह़िबे ख़ाना की इस मग़रूराना रविश पर सख़्त तक्लीफ़ पहुंची मगर कुछ फ़रमाया नहीं। कुछ दिनों बा'द वोह आप के यहां आए। **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने अपनी चारपाई पर जगह दी, वोह बैठे ही थे कि इतने में करीम बख़्श ह़जाम हुज़ूर (आ'ला ह़ज़रत) का ख़त़ बनाने के लिये आए, वोह इस फ़िक्र में थे कि कहां बैठूं ? **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने फ़रमाया : ''भाई करीम बख़्श ! क्यूं खड़े हो ? मुसल्मान आपस में भाई भाई हैं।'' और उन साह़िब के बराबर में बैठने का इशारा फ़रमाया, वोह बैठ गए, फिर उन साह़िब के ग़ुस्से की येह कैफ़िय्यत थी कि जैसे सांप फुन्कारें मारता है, वोह फ़ौरन उठ कर चले गए, फिर कभी न आए। ख़िलाफ़े मा'मूल जब अ़र्सा गुज़र गया तो **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ ربّ العزت ने फ़रमाया : अब फ़ुलां साह़िब तशरीफ़ नहीं लाते हैं ! फिर ख़ुद ही फ़रमाया : मैं भी ऐसे शख़्स से मिलना नहीं चाहता।

(حیات اعلیٰ حضرت، حصہ ۱، ص ۱۰۸)

देहातियों को नीचे न बैठने दिया

मुह़द्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद सरदार अह़मद क़ादिरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَاقِی की ख़िदमत में दो देहाती एक मस्अला पूछने के लिये ह़ाज़िर हुए । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस वक़्त चारपाई पर जल्वागर थे, देहातियों ने आप के इ़ल्मी मक़ाम का पास करते हुए ज़मीन पर बैठना चाहा मगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आ़जिज़ी करते हुए उन देहातियों को इसरार कर के न सिर्फ़ चारपाई पर बैठाया बल्कि अपनी चारपाई के सिरहाने की त़रफ़ बिठाया। हुक्म की ता'मील के लिये उन्हें आप के बराबर बैठना पड़ा और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन के मस्अले का जवाब मर्ह़मत फ़रमाया । (حیات محدّث اعظم، ص۱۹۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

छटी अ़लामत : मरीज़ों, मा'ज़ूरों और ग़रीबों को ह़क़ीर जानते हुए उन के पास बैठने से इज्तिनाब करना । (الحدیقۃ الندیۃ، ج۱، ص۵۸۵)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

सातवीं अ़लामत : किसी को ह़क़ीर जानते हुए सलाम में पहल न करना बल्कि दूसरे इस्लामी भाई से तवक़्क़ोअ़ रखना कि येह मुझे सलाम करे । (احیاء علوم الدین، ج۳، ص۴۲۷ ملخصًا)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

आठवीं अ़लामत : अपने मा तह़्त या किसी और इस्लामी भाई को ह़क़ीर जान कर उस से मुसा-फ़ह़ा करने को ना पसन्द करना, अगर हाथ मिलाना ही पड़ जाए तो त़बीअ़त पर गिरां (या'नी ना गवार) गुज़रना ।

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

नवीं अ़लामत : किसी मुअ़ज़्ज़मे दीनी की ता'ज़ीम के लिये खड़ा होने को गवारा न करना।

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

दसवीं अ़लामत : अपने लिबास, उठने बैठने और गुफ़्त-गू में इम्तियाज़ चाहना ताकि दूसरों को नीचा दिखा सके।

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

ग्यारहवीं अ़लामत : अपना क़ुसूर होते हुए भी ग़-लती तस्लीम न करना और मुआ़फ़ी मांगने के लिये तय्यार न होना।

(الحديقة الندية، ج١، ص٥٨٨ ملخصًا)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

बारहवीं अ़लामत : किसी की नसीह़त या मश्वरा क़बूल करने में ज़िल्लत महसूस करना। (احياء علوم الدين، ج٣، ص٤٢٢)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

तेरहवीं अ़लामत : अगर किसी को नसीह़त की या कोई मश्वरा दिया और उस ने किसी मा'क़ूल वजह से क़बूल न किया तो आपे से बाहर हो जाना। (احياء علوم الدين، ج٣، ص٤٢٢)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

चौदहवीं अ़लामत : हर एक से बह़स कर के ग़ालिब आने की कोशिश करना, दूसरे की दुरुस्त बात को ग़लत़ और अपनी ग़लत़ बात को भी सब से बेहतर तसव्वुर करना। (الحديقة الندية، ج١، ص٥٨٨)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

पन्दरहवीं अ़लामत : किसी को ह़क़ीर जान कर उस के हुक़ूक़ अदा न करना और अगर उस से ह़क़ की अदाई का मुत़ा-लबा किया जाए तो उसे तस्लीम न करना। (جامع العلوم والحکم،ص٤١٧ملخصاً)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

सोलहवीं अ़लामत : हर वक़्त दूसरों के मुक़ाबले में अपनी बरतरी के पहलू तलाश करते रहना। (احیاء علوم الدین، ج٣،ص٤٣٠ملخصًا)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

सत्तरहवीं अ़लामत : अपने घर के काम काज करने, बाज़ार से सौदा सुलफ़ उठा कर लाने को कस्रे शान समझना। (الحدیقة الندیة، ج١،ص٥٨٦)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

म-दनी फूल : अगर मरज़, तक्लीफ़, सुस्ती या बुढ़ापे की वजह से घर के काम काज में हाथ नहीं बटाता तो ऐसे शख़्स पर कोई इल्ज़ाम नहीं। (الحدیقة الندیة، ج١،ص٥٨٦)

अट्ठारहवीं अ़लामत : कम क़ीमत लिबास पहनने में शर्म महसूस करना कि लोग क्या कहेंगे ! (ایضاً)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

उन्नीसवीं अ़लामत : अमीरों की दा'वत में पूरे एहतिमाम से शरीक होना और ग़रीबों की दा'वत को सिरे से क़बूल ही न करना। (ایضاً)

मुह़ा-सबा : कहीं हम भी तो ऐसे नहीं ?

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अनोखी छींक

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ ''फ़ैज़ाने सुन्नत'' जिल्द 2 के 499 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल बाब, ''**ग़ीबत की तबाह कारियां**'' सफ़ह़ा 325 पर है : नमाज़ों और सुन्नतों पर अ़मल की आ़दत डालने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, सुन्नतों के तरबिय्यत के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक **म-दनी बहार** पेशे ख़िदमत है चुनान्चे एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ बयान है कि मेरी **रीढ़ की हड्डी** का मोहरा अपनी जगह से हिल गया था । बहुत इ़लाज कराया गया मगर इफ़ाक़ा न हुवा। एक इस्लामी भाई के तरग़ीब दिलाने पर आ़शिक़ाने रसूल के साथ दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िले** में सफ़र किया। रात के खाने के वक़्त अचानक मुझे ज़ोरदार छींक आई जिस से मेरा सारा जिस्म लरज़ उठा । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **इस अनोखी छींक की ब-र-कत से मेरी रीढ़ की हड्डी का मोहरा अपनी जगह पर दुरुस्त हो गया ।**

रीढ़ की हड्डियों, की भी बीमारियों, से मिलेगी शिफ़ा, क़ाफ़िले में चलो
ताजदारे ह़रम, का जो होगा करम, पाएगा दिल जिला, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

छींक की ब-र-कतें

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! म-दनी क़ाफ़िले की भी क्या ख़ूब बहारें हैं ! कि इस की ब-र-कत से ज़ोरदार छींक आई और पीठ का मोहरा दुरुस्त हो गया ! छींक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पसन्द है और इस की भी क्या ख़ूब ब-र-कतें हैं ! **दा'वते इस्लामी** के

इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना के मत़्बूआ़ 32 स-फ़्हात पर मुश्तमिल रिसाले, ''101 **म-दनी फूल**'' सफ़्हा 13 ता 14 पर है : (1) जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फैर लिया करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ दांतों की बीमारियों से महफ़ूज़ रहेगा। (مراٰةُ المناجيح ج٦ ص ٣٩٦) (2) ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : जो कोई छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे तो वोह दाढ़ और कान के दर्द में कभी मुब्तला नहीं होगा। (مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيْح ج٨ ص٤٩٩ تحت الحديث ٤٧٣٩) (3) छींक आने पर اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ कहना चाहिये बेहतर येह है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن या اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَال कहे। (4) सुनने वाले पर वाजिब है कि फ़ौरन ''يَرْحَمُكَ اللّٰه'' (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़्म फ़रमाए) कहे। और इतनी आवाज़ से कहे कि छींकने वाला ख़ुद सुन ले। (بہارِشریعت حصّہ١٦ ص١١٩) (5) जवाब सुन कर छींकने वाला कहे : ''يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ'' (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमाए) या येह कहे : ''يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ'' (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा ह़ाल दुरुस्त करे)।

(عالَمگیری ج ٥ ص ٣٢٦) (ग़ीबत की तबाहकारियां, ص٣٢٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तकब्बुर के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़

तकब्बुर का इज़्हार कभी तो इन्सान की **ह-रकात व स-कनात** से होता है जैसे मुंह फुलाना, नाक चढ़ाना, माथे पर बल डालना, घूरना, सर को एक त़रफ़ झुकाना, टांग पर टांग रख कर बैठना, टेक लगा कर खाना, अकड़ कर चलना वग़ैरा और कभी **गुफ़्त-गू** से म-सलन येह कहना : ''केचवे की औलाद ! तुम मेरे सामने

ज़बान चलाते हो, तुम्हारी येह हिम्मत कि मुझे जवाब देते हो'' वग़ैरा वग़ैरा। अल ग़रज़ मुख़्तलिफ़ अह़वाल, अक़्वाल और अफ़्आ़ल के ज़रीए **तकब्बुर** का इज़्हार हो सकता है, फिर बा'ज़ मु-तकब्बिरीन में इज़्हार के तमाम अन्दाज़ पाए जाते हैं और कुछ मु-तकब्बिरीन में बा'ज़। लेकिन **याद रहे** कि येह तमाम बातें उसी वक़्त **तकब्बुर** के ज़ुमरे में आएंगी जब कि दिल में **तकब्बुर** मौजूद हो मह़्ज़ इन चीज़ों को **तकब्बुर** नहीं कहा जा सकता।

(ماخوز از احیاء العلوم، ج۳، ص۴۳٤)

तकब्बुर के नतीजे में पैदा होने वाली बुराइयां

तकब्बुर ऐसा मोहलिक मरज़ है कि अपने साथ दीगर कई **बुराइयों** को लाता है और कई **अच्छाइयों** से आदमी को मह़रूम कर देता है। चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی लिखते हैं : ''मु-तकब्बिर शख़्स जो कुछ अपने लिये पसन्द करता है अपने मुसल्मान भाई के लिये पसन्द नहीं कर सकता, ऐसा शख़्स **आ़जिज़ी** पर भी क़ादिर नहीं होता जो तक़्वा व परहेज़ गारी की जड़ है, **कीना** भी नहीं छोड़ सकता, अपनी इ़ज़्ज़त बचाने के लिये **झूट** बोलता है, इस झूटी इ़ज़्ज़त की वजह से **ग़ुस्सा** नहीं छोड़ सकता, **ह़सद** से नहीं बच सकता, किसी की ख़ैर ख़्वाही नहीं कर सकता, दूसरों की नसीह़त क़बूल करने से मह़रूम रहता है, लोगों की **ग़ीबत** में मुब्तला हो जाता है अल ग़रज़ मु-तकब्बिर आदमी अपना भरम रखने के लिये बुराई करने पर मजबूर और हर अच्छे काम को करने से आ़जिज़ हो जाता है।''

(احیاء العلوم، ج۳،ص ٤۲۳ ملخصًا)

तकब्बुर से जान छुड़ा लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस गुनाह की ता'रीफ़, तबाह कारियां, बा'ज़ अ़लामतें जानने और मुसल्सल ग़ौरो फ़िक्र के बा'द अपने अन्दर **तकब्बुर** की मौजूदगी का इन्किशाफ़ होने की सूरत में

फ़ौरी तौ़र पर **इलाज** की कोशिशें करना हम पर लाज़िम है। यक़ीनन नफ़्सो शैत़ान अपना सारा ज़ोर लगाएंगे कि "हम सुधरने न पाएं", लेकिन सोचिये तो सही कि आख़िर हम कब तक नफ़्सो शैत़ान के सामने चारों शाने चित होते रहेंगे ! कब तक हम ख़्वाबे ख़रगोश के मज़े लेते रहेंगे ! क़ब्र में मीठी नींद सोने के लिये हमें आज ही बेदार होना पड़ेगा। आ'ला ह़ज़रत علیہ رحمۃ ربّ العزت मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में नफ़्सो शैत़ान के ख़िलाफ़ यूं फ़रियाद करते हैं :

सरवरे दीं लीजे अपने ना तुवानों की ख़बर
नफ़्सो शैत़ां सय्यिदा कब तक दबाते जाएंगे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुनाहों के इ़लाज में हमारी ज़रा सी ग़फ़्लत त़वील **परेशानी** का सबब बन सकती है कि न जाने कब मौत हमें दुन्या की रौनक़ों से उठा कर वीरान क़ब्र की तन्हाइयों में पहुंचा दे, जहां न सिर्फ़ घुप अंधेरा बल्कि वह़शत का बसेरा भी होगा, कोई मूनिस न कोई हमदर्द ! अगर **तकब्बुर** और दीगर गुनाहों के सबब हमें अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला कर दिया गया, आग भड़का दी गई, सांप और बिच्छू हम से लिपट गए, हमें मारा पीटा गया तो क्या करेंगे ! किस से फ़रियाद करेंगे ! कौन हमें छुड़ाने आएगा ! आज मौक़अ़ है कि **तकब्बुर** समेत अपने तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ को मना लीजिये।

कर ले तौबा रब (عَزَّوَجَلَّ) की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

''इलाजे तकब्बुर'' के आठ हुरूफ़ की निस्बत से तकब्बुर पर उभारने वाले 8 अस्बाब और उन का इलाज

हर मरज़ के इलाज के लिये उस के **अस्बाब** का जानना बहुत ज़रूरी है, बुन्यादी तौर पर दिल में **तकब्बुर** उसी वक़्त पैदा होता है जब आदमी खुद को बड़ा समझे और अपने आप को वोही बड़ा समझता है जो अपने अन्दर किसी कमाल की बू पाता है, फिर वोह कमाल या तो दीनी होता है जैसे इल्मो अमल वग़ैरा और कभी दुन्यवी म-सलन मालो दौलत और ताक़त व मन्सब वग़ैरा, यूं **तकब्बुर** के कम अज़ कम 8 अस्बाब हैं : (1) इल्म (2) इबादत (3) मालो दौलत (4) हसब व नसब (5) ओहदा व मन्सब (6) काम्याबियां (7) हुस्नो जमाल (8) ताक़त व कुव्वत।

(احیاء علوم الدین، ج۳، ص۴۲۶ تا ۴۳۳ ملخصًا)

(1) इल्म

इल्मे दीन सीखना सिखाना बहुत बड़ी सआदत है और अपनी ज़रूरत के ब क़दर इस का हासिल करना **फ़र्ज़** भी है मगर बा'ज़ अवक़ात इन्सान कस्रते इल्म की वजह से भी **तकब्बुर** की आफ़त में मुब्तला हो जाता है और कम इल्म इस्लामी भाइयों को हक़ीर जानने लगता है। बात बात पर उन्हें झाड़ना, वोह कोई सुवाल पूछ बैठें तो उन की कम इल्मी का एहसास दिला कर ज़लील करना, उन्हें ''जाहिल'' और ''गंवार'' जैसे बुरे अल्क़ाबात से याद करना उस की आदत बन जाता है। ऐसा शख़्स तवक़्क़ोअ रखता है कि लोग उसे सलाम करने में पहल करें और अगर येह किसी अनपढ़ को सलाम में पहल कर ले या दो घड़ी उस से मुलाक़ात कर ले या उस की दा'वत क़बूल कर ले तो उस पर अपना एहसान समझता है, आम तौर पर लोग उस की ख़ैर ख़्वाही करते हैं मगर येह उन के साथ

हुस्ने सुलूक नहीं करता, लोग उस की मुलाक़ात को आते हैं लेकिन येह ख़ुद चल कर उन से मुलाक़ात को नहीं जाता, लोग उस की बीमार पुर्सी करते हैं मगर येह उन की बीमार पुर्सी नहीं करता, कोई इस की ख़िदमत में कोताही करे तो उसे बुरा जानता है, वोह ख़ुद को **अल्लाह** तआ़ला के हां दूसरे लोगों से अफ़्ज़लो आ'ला समझता है, उन के गुनाहों को बुरा जानता अपनी ख़ताएं भूल जाता है । अल ग़रज़ ऐसा शख़्स सर से पाउं तक आफ़ते इल्म या'नी **तकब्बुर** में गरिफ़्तार हो जाता है, चुनान्चे मरवी है कि : ''اٰفَةُ الْعِلْمِ الْخُيَلَاءُ या'नी इल्म की आफ़त **तकब्बुर** है।''

(فیض القدیر ،تحت الحدیث :٩٦٥٤ ج٦ ص٤٧٨)

इल्म से पैदा होने वाले तकब्बुर के इलाज

(1) ऐसे इस्लामी भाइयों को ''**मुअ़ल्लिमुल म-लकूत**'' के मन्सब तक पहुंचने वाले (या'नी शैत़ान) का अन्जाम याद रखना चाहिये जिस ने अपने आप को ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ से अफ़्ज़ल क़रार दिया था मगर उसे इस **तकब्बुर** के नतीजे में क्या मिला ! डरना चाहिये कि कहीं येह **तकब्बुर** हमें भी अ़ज़ाबे जहन्नम का ह़क़दार न बना दे ।

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी
हाए मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब عَزَّوَجَلَّ

(2) इस रिवायत को ग़ौर से पढ़िये और अपना **मुह़ा-सबा** कीजिये कि आप कहां खड़े हैं !

अहले इल्म के तकब्बुर में मुब्तला होने का सबब

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बिह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''**इल्म** की मिसाल तो बारिश के उस पानी की त़रह़ है जो आस्मान से साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ और मीठा नाज़िल होता है और

दरख़्त उस को अपनी शाख़ों के ज़रीए जज़्ब कर लेते हैं। अब अगर दरख़्त कड़वा होता है तो बारिश का पानी उस की कड़वाहट में इज़ाफ़ा करता है और अगर वोह दरख़्त मीठा होता है तो उस की मिठास में इज़ाफ़ा करता है बस यूंही **इल्म** बज़ाते ख़ुद तो फ़ाएदे का बाइस है मगर जब ख़्वाहिशाते नफ़्स में गरिफ़्तार इन्सान इस को ह़ासिल करता है तो येह इल्म उस के **तकब्बुर** में मुब्तला होने का सबब बन जाता है और जब शरीफ़ुन्नफ़्स इन्सान को येह दौलते इल्म ह़ासिल होती है तो येह उस की शराफ़त, इ़बादत, ख़ौफ़ो ख़शिय्यत और परहेज़ गारी में इज़ाफ़ा करता है।''

(الحدیقة الندیة، ج ۱، ص ۵۵۷)

आ़लिम का ख़ुद को ''आ़लिम'' समझना

(3) ख़ुद को ''आ़लिम'' बल्कि ''अ़ल्लामा'' कहने बल्कि दिल में समझने वालों के लिये भी मक़ामे ग़ौर है कि आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن जिन्हें 55 से ज़ाइद उ़लूम व फ़ुनून पर उ़बूर ह़ासिल था, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की **इल्मी वजाहत, फ़िक़्ही महारत और तह़क़ीक़ी बसीरत** के जल्वे देखने हों तो **फ़तावा र-ज़विय्या** देख लीजिये जिस की 30 जिल्दें (तख़्रीज शुदा) हैं। एक ही मुफ़्ती के क़लम से निकला हुवा येह ग़ालिबन उर्दू ज़बान में दुन्या का ज़ख़ीम तरीन मज्मूअ़ए फ़तावा है जो कि तक़रीबन बाईस हज़ार (22000) स-फ़ह़ात, छ हज़ार आठ सो सेंतालीस (6847) सुवालात के जवाबात और दो सो छ (206) रसाइल पर मुश्तमिल है। जब कि हज़ारहा मसाइल ज़िम्नन ज़ेरे बह़स आए हैं। ऐसे अ़ज़ीमुश्शान आ़लिमे दीन अपने बारे में आ़जिज़ी करते हुए फ़रमा रहे हैं कि ''फ़क़ीर तो एक नाक़िस, क़ासिर, अदना त़ालिबे इल्म है, कभी ख़्वाब में भी अपने लिये कोई **मर्तबए इल्म** क़ाइम न किया और بحمدہٖ تعالٰی ब ज़ाहिर अस्बाब येही एक वजह है कि रह़मते इलाही मेरी दस्त गीरी फ़रमाती है, मैं अपनी बे बज़ा-अ़ती (या'नी बे सरो

सामानी) जानता हूं, इस लिये फूंक फूंक कर क़दम रखता हूं, मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने करम से मेरी मदद फ़रमाते हैं और मुझ पर इ़ल्मे ह़क़ का इफ़ाज़ा फ़रमाते (या'नी फ़ैज़ पहुंचाते) हैं, और इन्हीं के रब्बे करीम के लिये ह़म्द है, और इन पर अ-बदी सलातो सलाम ।'' (فتاوی رضویہ، ج۱، ص۹۳) एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : ''कभी मेरे दिल में येह ख़त़रा न गुज़रा कि मैं ''**आ़लिम**'' हूं ।''

मक़ामे ग़ौर है कि जब इतने बड़े मुफ़्ती, मुह़द्दिस, मुफ़स्सिर और फ़क़ीह ख़ुद को ''आ़लिम'' नहीं समझते तो मा व शुमा किस शुमार में हैं !

ख़ुद को आ़लिम कहने वाला जाहिल है !

ह़दीसे पाक में तो यहां तक आया कि ''مَنْ قَالَ اَنَا عَالِمٌ فَهُوَ جَاهِلٌ'' या'नी जिस शख़्स ने येह कहा कि मैं आ़लिम हूं, तो ऐसा शख़्स जाहिल है ।'' (المعجم الاوسط، الحديث ٦٨٤٦، ج٥، ص١٣٩)

शारिह़ीन ने इस ह़दीसे मुबा-रका में अपने आप को ''**आ़लिम**'' कहने वाले को जाहिल से ता'बीर करने की वजह येह बयान की, कि जो वाक़ेई आ़लिम होता है वोह इस इ़ल्म के ज़रीए़ अपने नफ़्स की मा'रिफ़त रखता है उसे अपना नफ़्स इन्तिहाई ह़क़ीर व आ़जिज़ नज़र आता है, इस लिये अपने लिये ''इ़ल्म का दा'वा'' नहीं करता और वोह येह समझता है कि ह़क़ीक़ी इ़ल्म तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के पास है जैसा कि इर्शादे बारी तआ़ला है : '' وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۱۶﴾ (پ۲، البقرۃ:۲۱۶) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते ।'' और जो **आ़लिम** होने का दा'वा करे तो गोया उस ने अभी इ़ल्म को समझा ही नहीं है लिहाज़ा उसे **जाहिल** कहा गया ।

(الحديقة الندية، ج١، ص٥٦٧ ملخصًا)

म-दनी फूल : आ़लिम अगर अपना ''आ़लिम'' होना लोगों पर ज़ाहिर

करे तो इस में ह़रज नहीं मगर येह ज़रूरी है कि **तफ़ाख़ुर** (फ़ख़्र जताने) के त़ौर पर येह इज़्हार न हो कि **तफ़ाख़ुर ह़राम** है बल्कि मह़्ज़ तह़दीसे ने'मते इलाही के लिये येह ज़ाहिर हुवा और येह मक़्सद हो कि जब लोगों को ऐसा मा'लूम होगा तो इस्तिफ़ादा करेंगे कोई दीन की बात पूछेगा और कोई पढ़ेगा।

(بہارِ شریعت، حصہ۱۶، ص۲۷۰)

(4) ऐसी रिवायात पेशे नज़र रखे जिस में उ़-लमा को अ़ज़ाब दिये जाने का तज़्किरा है और ख़ुद को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे नियाज़ी से डराए, म-सलन :

सब से ज़ियादा अ़ज़ाब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा अ़ज़ाब उस आ़लिम को होगा जिस के इ़ल्म ने उसे नफ़्अ़ न दिया होगा।"

(شعب الایمان،باب فی نشر العلم، الحدیث: ۱۷۷۸، ج۲،ص ۲۸۵)

ख़ुद को ह़क़ीर समझने का त़रीक़ा

(5) ज़ेवरे इ़ल्म से आरास्ता इस्लामी भाई दूसरों को ह़क़ीर और ख़ुद को अफ़्ज़ल समझने के शैत़ानी वार से बचने के लिये येह म-दनी सोच अपना ले कि अगर अपने से **कम उ़म्र** को देखे तो उसे अपने से येह ख़याल कर के अफ़्ज़ल समझे कि इस की उ़म्र थोड़ी है, इस के गुनाह भी मुझ से कम होंगे, इस लिये मुझ से बेहतर है और अगर अपने से किसी **बड़े** को देखे तो उस को भी ख़ुद से बेहतर समझे और येह जाने कि इस की उ़म्र मुझ से ज़ियादा है, इस ने नेकियां भी मुझ से ज़ियादा की होंगी, और अगर **हम उ़म्र** को देखे तो उस के बारे में हुस्ने ज़न रखे कि येह इत़ाअ़त, इ़बादत और नेकी में मुझ से बेहतर है, अगर अपने से **कम इ़ल्म** या जाहिल को देखे तो उस को भी अपने से बेहतर समझे कि येह अपनी जहालत व कम इ़ल्मी की वजह से गुनाह करता है और मैं इ़ल्म रखने के बा वुजूद गुनाह में गरिफ़्तार हूं इस लिये येह जाहिल तो मुझ से

ज़ियादा उ़ज़्र वाला है या'नी इस के पास तो इ़ल्म के न होने की वजह से जह्ल का उ़ज़्र है मैं कौन सा उ़ज़्र पेश करूंगा ! और अगर ख़ुद से **ज़ियादा इ़ल्म** वाले को देखे तो उस को भी ख़ुद से बेहतर समझे और येह जाने कि इस का इ़ल्म ज़ियादा है लिहाज़ा तक़्वा और इ़ल्म की वजह से इ़बादात भी ज़ियादा होंगी इस लिये कि इसे मा'लूम है कि किस किस इ़बादत का अज्रो सवाब ज़ियादा है ! कौन कौन से आ'माल का द-रजा बुलन्द है ! इस ने नेकियां भी अपने इ़ल्म की वजह से ज़ियादा जम्अ़ कर ली होंगी और इ़ल्म की फ़ज़ीलत की वजह से जो बख़्शिश व अ़ता होगी वोह उस के नसीब में होगी, अगर किसी **काफ़िर** को देखे तो अगर्चे उसे ह़क़ीर जानने में शरअ़न कोई ह़रज नहीं मगर अपने दिल से **तकब्बुर** का सफ़ाया करने के लिये उसे भी ब ह़ैसिय्यते इन्सान के ख़ुद से ह़क़ीर और कमतर न जाने, काफ़िर को देख कर अपने अन्दर इस त़रह़ आ़जिज़ी पैदा करे कि इस वक़्त येह काफ़िर है और मैं मोमिन, लेकिन क्या मा'लूम कि येह तौबा कर ले और आख़िरी वक़्त में मुसल्मान हो जाए यूं इस का ख़ातिमा ईमान पर हो जाए और येह बख़्शिश व नजात का मुस्तह़िक़ बन जाए जब कि मैं सारी उ़म्र ईमान पर गुज़ार कर मुम्किन है अपनी मौत से पहले कोई ऐसा काम कर बैठूं कि मेरा ईमान जाता रहे और मेरा ख़ातिमा कुफ़्र पर हो ! ह़दीसे पाक में है : ''اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيْم या'नी आ'माल का दारो मदार ख़ातिमे पर है।'' (صحیح البخاری الحدیث٦٦٠٧،ج٤،ص٢٧٤) **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : ''या'नी मरते वक़्त जैसा काम होगा वैसा ही अन्जाम होगा लिहाज़ा चाहिये कि बन्दा हर वक़्त ही नेक काम करे कि शायद वोही इस का आख़िरी वक़्त हो।'' (مرآۃ المناجیح،ج١،ص٩٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बे नियाज़ है उस की ''ख़ुफ़्या तदबीर'' को कोई नहीं जानता, किसी को भी अपने इ़ल्म या इबादत पर नाज़ नहीं करना चाहिये । कहीं ऐसा न हो

कि **तकब्बुर** की नुहूसत की वजह से मरने से पहले हमारा ईमान सल्ब हो जाए और مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारा ख़ातिमा कुफ़्र पर हो, अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ऐसा हुवा तो इल्म के दफ़ीने और इबादतों के ख़ज़ीने हमारे कुछ काम न आएंगे ।

मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़ता से
हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही عَزَّوَجَلَّ

काफ़िर को काफ़िर कहना ज़रूरी है

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 686 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब**'' के सफ़ह़ा 59 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते हैं : काफ़िर को काफ़िर कहना न सिर्फ़ जाइज़ बल्कि बा'ज़ सूरतों में फ़र्ज़ है । **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى लिखते हैं : एक येह वबा भी फैली हुई है कहते हैं कि ''हम तो **काफ़िर** को भी **काफ़िर** न कहेंगे कि हमें क्या मा'लूम कि उस का ख़ातिमा कुफ़्र पर होगा'' येह भी ग़लत़ है क़ुरआने अ़ज़ीम ने **काफ़िर** को **काफ़िर** कहा और काफ़िर कहने का हुक्म दिया । (चुनान्चे इर्शाद होता है :)

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो !

(پ ۳۰ الکافرون ۱)

और अगर ऐसा है तो मुसल्मान को भी मुसल्मान न कहो तुम्हें क्या मा'लूम कि इस्लाम पर मरेगा ख़ातिमे का ह़ाल तो ख़ुदा जाने मगर शरीअ़त ने काफ़िर व मुस्लिम में इम्तियाज़ रखा है ।

(بہارِ شریعت، جلد۲، حصّہ ۹، ص ۴۵۵)

येह मुझ से बेहतर है

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह ताबेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی जब किसी बूढ़े आदमी को देखते तो फ़रमाते : "येह मुझ से **बेहतर** है और मुझ से पहले **अल्लाह** तआ़ला की इबादत करने का शरफ़ रखता है ।" और जब किसी जवान को देखते तो फ़रमाते : "येह मुझ से बेहतर है क्यूं कि मेरे गुनाह इस से कहीं ज़ियादा हैं ।"

(حلیۃ الاولیاء، ج۲،ص ۲۵۷،الحدیث۲۱٤۳)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب!　　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ैर नाफ़ेअ़ इल्म से ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की पनाह

(6) नफ़्अ़ न देने वाले इ़ल्म से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगिये । मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दुआ़ किया करते थे : "اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ عِلْمٍ لَایَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لَایَخْشَعُ" या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ऐसे इ़ल्म से तेरी पनाह चाहता हूं जो नफ़्अ़ न दे, और ऐसे दिल से (तेरी पनाह चाहता हूं) जो आ़जिज़ी व इन्किसारी न करे ।"

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، الحدیث: ۲۷۲۲،ص۱٤۵۷ ملخصًا)

क़ियामत के चार सुवालात

(7) अपने इ़ल्म पर अ़मल कीजिये । सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने गुहर बार है : "क़ियामत के दिन बन्दा उस वक़्त तक क़दम न हटा सकेगा जब तक उस से येह चार सुवालात न कर लिये जाएं : (1) अपनी उ़म्र किन कामों में गुज़ारी (2) अपने इ़ल्म पर कितना अ़मल किया (3) माल किस त़रह़ कमाया और कहां ख़र्च किया और (4) अपने जिस्म को किन कामों में बोसीदा किया ।" (جامع الترمذی، الحدیث: ۲٤۲۵،ج٤ص۱۸۸)

(9) अपने अकाबिरीन عليهم رحمة الله المبين के नुक़ूशे क़दम से रहनुमाई ह़ासिल कीजिये कि इल्मो अ़मल के पहाड़ होने के बा वुजूद कैसी **आ़जिज़ी** किया करते थे !

"आ़जिज़ी का नूर" के 10 हुरूफ़ की निस्बत से बुज़ुर्गाने दीन की आ़जिज़ी की दस ह़िकायात

(1) काश मैं परिन्दा होता

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र सिद्दीक़** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक परिन्दे को दरख़्त पर बैठे हुए देखा तो फ़रमाया : **ऐ परिन्दे !** तू बड़ा ख़ुश बख़्त है, **वल्लाह !** काश ! मैं भी तेरी त़रह़ होता, दरख़्त पर बैठता, फल खाता, फिर उड़ जाता, तुझ पर कोई ह़िसाब व अ़ज़ाब नहीं, ख़ुदा की क़सम ! काश ! मैं किसी रास्ते के कनारे पर कोई **दरख़्त** होता, वहां से किसी ऊंट का गुज़र होता, वोह मुझे मुंह में डालता चबाता फिर निगल जाता । **ऐ काश ! मैं इन्सान न होता ।** (مُصَنَّف ابن ابی شَیبة ج٨ ص ١٤٤، دارالفکر بیروت) एक मौक़अ़ पर फ़रमाया : "काश ! मैं किसी मुसल्मान के पहलू का बाल होता ।"

(الزُّھد،للامام احمد بن حنبل ص ١٣٨ رقم ٥٦٠)

(2) काश ! मैं फलदार पेड़ होता

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक बार ग़-ल-बए ख़ौफ़ के वक़्त फ़रमाने लगे : "ख़ुदा की क़सम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिस दिन मुझे पैदा फ़रमाया था काश ! उस दिन वोह मुझे ऐसा पेड़ बना देता जिस को काट दिया जाता और उस के फल खा लिये जाते ।"

(مصنف ابنِ ابی شیبہ ج٨ص١٨٣)

(3) मैं इन की आ़जिज़ी देखना चाहता था

जलीलुल क़द्र मुह़द्दिस ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी

عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُاللّٰہِ الۡقَوِی रमला तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَکۡرَمۡ ने उन को पैग़ाम भेजा कि हमारे पास तशरीफ़ ला कर कोई ह़दीस सुनाइये । ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُاللّٰہِ الۡقَوِی तशरीफ़ ले आए तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَکۡرَمۡ से अ़र्ज़ की गई : "आप ऐसे लोगों को यूं बुलाते हैं !" फ़रमाया : "मैं इन की तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) देखना चाहता था ।" (احیاء العلوم، ج۳، ص ٤٣٥)

(4) इसी वजह से तो वोह "मालिक" हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार علیہ رحمۃ اللہ الغفّار फ़रमाते हैं : "अगर कोई ए'लान करने वाला मस्जिद के दरवाज़े पर खड़ा हो कर ए'लान करे कि तुम में से जो सब से बुरा है वोह बाहर निकले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझ से पहले कोई नहीं निकलेगा, हां ! जिस में दौड़ने की ज़ियादा ताक़त हो वोह मुझ से पहले निकलेगा ।" रावी कहते हैं जब ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार علیہ رحمۃ اللہ الغفّار की येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक علیہ رحمۃ اللہ الخالق को पहुंची तो उन्हों ने फ़रमाया : इसी वजह से तो वोह "**मालिक**" हैं ।

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم الکبر والعجب، فصل فضیلۃ التواضع، ج۳، ص ٤٢٠)

(5) इमाम फ़ख़्रुल इस्लाम के आंसू

इमाम फ़ख़्रुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन मुह़म्मद बज़्दवी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُاللّٰہِ الۡقَوِی जब बग़्दाद शरीफ़ के मद्रसए निज़ामिया में सद्र मुदर्रिस मुक़र्रर किये गए तो पहले ही दिन जब वोह मस्नदे तदरीस पर बैठे तो उन्हें ख़याल आ गया कि येह वोही मस्नद है जिस पर कभी ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ शीराज़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُاللّٰہِ الۡقَوِی और ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُاللّٰہِ الۡوَالِی जैसे अकाबिरे उम्मत बैठ कर दर्स दे चुके हैं। येह तसव्वुर आते ही उन के दिल पर एक अ़जीब

कैफ़िय्यत त़ारी हो गई और आंखों से आंसूओं का एक सैलाब उमंड आया। बड़ी देर तक इमामा अपनी आंखों पर रख कर रोते रहे और येह शे'र पढ़ा

خَـلَتِ الدِّيَـارُ فَسُدْتُ غَيْرَ مَسُوْدٍ

وَمِـنَ الْـعِـنَـاءِ تَـفَرُّدِى بِـالسُّوْدِ

या'नी मुल्क बा कमाल लोगों से ख़ाली हो गया और मैं जो सरदारी के लाइक़ नहीं था सरदार बन गया। मुझ जैसे आदमी का सरदार बन जाना किस क़दर तक्लीफ़ देह है ! (روحانی حکایات، ص۹۰)

(6) क़ैदियों के साथ खाना

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शहाबुद्दीन सुहर वर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : एक मर्तबा मुझे अपने पीरो मुर्शिद ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन अबू नजीब सुहर वर्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के हमराह मुल्के शाम जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा। किसी मालदार शख़्स ने खाने की कुछ अश्या क़ैदियों के सरों पर रखवा कर शैख़ की ख़िदमत में भिजवाई। उन क़ैदियों के पाउं बेड़ियों में जकड़े हुए थे। जब दस्तर ख़्वान बिछाया गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ख़ादिम को हुक्म दिया : "उन क़ैदियों को बुलाओ ताकि वोह भी दरवेशों के हमराह एक ही दस्तर ख़्वान पर बैठ कर खाना खाएं।" लिहाज़ा उन सब क़ैदियों को लाया गया और एक दस्तर ख़्वान पर बिठा दिया गया। शैख़ ज़ियाउद्दीन अबुन्नजीब علیہ رحمۃ اللہ المجیب अपनी निशस्त से उठे और उन क़ैदियों के दरमियान जा कर इस त़रह़ बैठ गए कि गोया आप इन्ही में से एक हैं। उन सब ने आप के हमराह बैठ कर खाना खाया। उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की त़बीअ़त की आ़जिज़ी व इन्किसारी हमारे सामने ज़ाहिर हुई कि इस क़दर इल्मो फ़ज़्ल और मर्तबा व मक़ाम के बा वुजूद आप ने **तकब्बुर** से अपने आप को बचाए रखा।

(الابریز، ج۲، ص۱٤٦ ملخصًا)

(7) कुत्ते के लिये रास्ता छोड़ दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن जय्यिद आ़लिमे दीन और बहुत बड़े फ़क़ीह थे। एक दिन शदीद बारिश और कीचड़ के मौसिम में अपने अ़क़ीदत मन्दों की हमराही में कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि सामने से एक कुत्ता आता दिखाई दिया, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه दीवार के साथ लग गए और कुत्ते के गुज़रने के लिये रास्ता छोड़ दिया। जब कुत्ता क़रीब आया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه निचली त़रफ़ कीचड़ में आ गए और रास्ते का ऊपरी साफ़ ह़िस्सा कुत्ते के गुज़रने के लिये छोड़ दिया। जब कुत्ता गुज़र गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के हमराहियों ने देखा कि आप के चेहरे पर अफ़्सोस के आसार मौजूद हैं। उन्हों ने अ़र्ज़ की : "ह़ज़रत ! आज हम ने एक ह़ैरान कुन बात देखी है कि आप ने कुत्ते के लिये साफ़ रास्ता छोड़ दिया और ख़ुद कीचड़ में पाउं रख दिया !" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाब दिया : "जब मैं पहले दीवार के साथ लगा तो मुझे ख़याल आया कि मैं ने अपने आप को बेहतर समझते हुए अपने लिये साफ़ जगह मुन्तख़ब कर ली, मैं डरा कि मेरी इस ह़-र-कत के बाइ़स कहीं **अल्लाह** तआ़ला मुझ से नाराज़ न हो जाए, लिहाज़ा मैं वोह जगह छोड़ कर कीचड़ में आ गया।"

(الابریز، ج۲، ص۱٤٦)

(8) अपने दिल की निगरानी करते रहो

ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی को एक मर्तबा येह तसव्वुर हो गया कि मैं बहुत बड़ा बुज़ुर्ग और शैख़े वक़्त हो गया हूं, लेकिन इस के साथ येह ख़याल भी आया कि मेरा येह सोचना फ़ख़्र व तकब्बुर का आईनादार है। चुनान्चे फ़ौरन ख़ुरासान का रुख़ किया और एक मन्ज़िल पर पहुंच कर दुआ़ की : "ऐ अल्लाह जब तक ऐसे कामिल बन्दे को नहीं भेजेगा जो मुझ को मेरी ह़क़ीक़त से रू शनास

करा सके उस वक़्त तक यहीं पड़ा रहूंगा।'' तीन दिन इसी त़रह़ गुज़र गए तो चौथे दिन एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ऊंट पर आए और आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को क़रीब आने का इशारा किया लेकिन इस इशारे के साथ ऊंट के पाउं ज़मीन में धंसते चले गए। उन्हों ने चुभते हुए लहजे में कहा : ''क्या तुम येह चाहते हो कि मैं अपनी खुली हुई आंखों को बन्द कर लूं और बन्द आंख खोल दूं और बा यज़ीद समेत पूरे बिस्त़ाम को ग़रक़ कर दूं ?'' येह सुन कर आप घबरा गए और पूछा : ''आप कौन हैं और कहां से आए हैं ?'' जवाब दिया कि ''जिस वक़्त तुम ने **अल्लाह** तआ़ला से अ़ह्द किया था उस वक़्त मैं यहां से तीन हज़ार मील दूर था और इस वक़्त मैं सीधा वहीं से आ रहा हूं, मैं तुम्हें बा ख़बर करता हूं कि अपने क़ल्ब की निगरानी करते रहो।'' येह कह कर वोह बुज़ुर्ग ग़ाइब हो गए।

(تذکرۃ الاولیاء (فارسی)،ص ۱۴۵)

(9) जब दरियाए दिजला इस्तिक़्बाल के लिये बढ़ा.....

ह़ज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامی फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं दरियाए दिजला पर पहुंचा तो पानी जोश मारता हुवा मेरे इस्तिक़्बाल को बढ़ा लेकिन मैं ने कहा : ''मुझे तेरे इस्तिक़्बाल से (اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) शम्मा बराबर (या'नी थोड़ा सा) भी ग़ुरूर न होगा क्यूं कि मैं अपनी तीस सालह रियाज़त को **तकब्बुर** कर के हरगिज़ ज़ाएअ़ नहीं कर सकता।''

(تذکرۃ الاولیاء فارسی،ص ۱۳۴)

(10) अब मज़ीद की गुन्जाइश नहीं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِیۡ इर्शाद फ़रमाते हैं : ''अगर सारी मख़्लूक़ भी मुझे कमतर मर्तबा देने और ज़लील करने की कोशिश करे तो नहीं कर सकेगी क्यूं कि मैं ने ख़ुद ही

अपने नफ़्स को इतना ज़लील व कमतर कर दिया है जिस में मज़ीद कमी नहीं हो सकती।'' (الحديقة الندية، ج ١، ص ٥٩١)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन सब पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) इबादत व रियाज़त

इल्म से भी बढ़ कर जो चीज़ **तकब्बुर** का बाइ़स बन सकती है वोह कस्रते इबादत है म-सलन किसी इस्लामी भाई को फ़र्ज़ इबादात के साथ साथ नवाफ़िल म-सलन तहज्जुद, इशराक़ व चाश्त, अव्वाबीन के नवाफ़िल, रोज़ाना तिलावते क़ुरआन, नफ़्ली रोज़े रखने, ज़िक्रो अज़्कार और दीगर वज़ाइफ़ करने की सआ़दत मुयस्सर हो तो वोह बा'ज़ अवक़ात दीगर इस्लामी भाइयों को जो नफ़्ली इबादत नहीं कर पाते, ह़क़ीर समझना शुरूअ़ कर देता है जिस का बा'ज़ अवक़ात ज़बान से और कभी इशारों किनायों से इज़्हार भी कर बैठता है। इबादत बज़ाते ख़ुद एक निहायत ही आ'ला चीज़ है लेकिन बा'ज़ इस्लामी भाई इबादत गुज़ार होने के ज़ो'म में ख़ुद को ''बड़ा पहुंचा हुवा'' समझने लगते हैं और दूसरों को गुनाहगार क़रार दे कर हर वक़्त उन की ऐबजूई में मुब्तला रहते हैं। ख़ुद को नेक व पारसा और नजात पाने वाला और दूसरों को गुनाहगार व बदकार और तबाह व बरबाद होने वाला समझना **तकब्बुर** की बद तरीन शक्ल है।

इबादत से पैदा होने वाले तकब्बुर का इलाज

ऐसे इस्लामी भाई को येह बात अपने दिलो दिमाग़ में बिठा लेनी चाहिये कि अगर वोह नफ़्ली इबादतें करता भी है तो इस में उस का क्या कमाल ! येह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करम है कि उसे

इबादत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाई नीज़ इबादत वोही मुफ़ीद है जिस में शराइते अदा के साथ साथ शराइते क़बूलिय्यत म-सलन निय्यत की दुरुस्ती वग़ैरा भी पाई जाएं और वोह मुफ़्सिदात (या'नी फ़ासिद कर देने वाली चीज़ों) से भी महफ़ूज़ रहे। क्या ख़बर कि जिन इबादतों पर वोह इतरा रहा है शराइत की कमी की वजह से बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मक़्बूल ही न हों ! या फिर **तकब्बुर** की वजह से इन का सवाब ही जाता रहे, बल्कि वोह **तकब्बुर** की वजह से हो सकता है बजाए जन्नत के مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जहन्नम में पहुंच जाए।

इसराईली इबादत गुज़ार और गुनहगार

बनी इसराईल का एक शख़्स जो बहुत गुनहगार था एक मर्तबा बहुत बड़े आ़बिद (या'नी इबादत गुज़ार) के पास से गुज़रा जिस के सर पर बादल साया फ़िगन हुवा करते थे। उस गुनहगार शख़्स ने अपने दिल में सोचा : "मैं बनी इसराईल का इन्तिहाई गुनहगार और येह बहुत बड़े इबादत गुज़ार हैं, अगर मैं इन के पास बैठूं तो उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला मुझ पर भी रह़्म फ़रमा दे।" येह सोच कर वोह उस आ़बिद के पास बैठ गया। आ़बिद को उस का बैठना बहुत ना गवार गुज़रा, उस ने दिल में कहा : "कहां मुझ जैसा इबादत गुज़ार और कहां येह परले द-रजे का गुनहगार ! येह मेरे पास कैसे बैठ सकता है !" चुनान्चे उस ने बड़ी ह़क़ारत से उस शख़्स को मुख़ातब किया और कहा : "यहां से उठ जाओ !" इस पर **अल्लाह** तआ़ला ने उस ज़माने के नबी عَلَيْهِ السَّلَام पर वह़्य भेजी कि "उन दोनों से फ़रमाइये कि वोह अपने अ़मल नए सिरे से शुरूअ़ करें, मैं ने इस गुनहगार को (इस के हुस्ने ज़न के सबब) बख़्श दिया और इबादत गुज़ार के अ़मल (उस के तकब्बुर के बाइ़स) ज़ाएअ़ कर दिये।"

(احیاء علوم الدین، ج۳، ص۴۲۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि जब एक गुनहगार शख़्स ने ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को अपने दिल में बसाया और आ़जिज़ी को अपनाया तो उस की बख़्शिश कर दी गई जब कि **तकब्बुर**

करने वाले नेक परहेज़ गार इन्सान की नेकियां बरबाद हो गईं ।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासिते़ हो
कर इख़्लास ऐसा अ़ता या इलाही

बद नसीब आ़बिद

बनी इसराईल में एक शख़्स एक आ़बिद के पास आया । वोह उस वक़्त सज्दा रेज़ था, उस शख़्स ने आ़बिद की गरदन पर पाउं रख दिया, आ़बिद ने सख़्त तै़श के आ़लम में कहा : ''पाउं उठाओ ! **अल्लाह** तआ़ला की क़सम ! वोह तुम्हें नहीं बख़्शेगा ।'' तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मेरा बन्दा मुझ पर क़सम खाता है कि मैं अपने बन्दे को नहीं बख़्शूंगा, बेशक मैं ने उसे **बख़्श** दिया ।''

(مجمع الزوائد ،کتاب التوبة ،الحدیث ١٧٤٨٥ ج ١٠،ص٣١٧)

मेरे सबब फ़ुलां बरबाद हो गया !

इस रिवायत से वोह नादान इस्लामी भाई इ़ब्रत पकड़ें कि अगर उन के सामने कोई शख़्स दूसरे मुसल्मान को अज़िय्यत पहुंचाए तो उन्हें कोई ना गवारी महसूस नहीं होती, माथे पर शिकन तक नहीं आती लेकिन जब येही शख़्स ख़ुद इन की ''शान'' में गुस्ताख़ी की जुरअत कर बैठे तो येह कहते सुनाई देते हैं कि देखना ! अ़न्क़रीब इसे **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से कैसी सज़ा मिलती है ! फिर जब वोही शख़्स तक़्दीरे इलाही عَزَّوَجَلَّ से किसी मुसीबत में गरिफ़्तार हो जाता है तो येह समझते बल्कि बोल पड़ते हैं : ''देखा ! उस का अन्जाम !'' और अपने तईं गुमान करते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी वजह से बदला ले लिया है, ह़ालां कि उस शख़्स को मुसीबत पहुंचना इस बात की दलील नहीं है कि उस का येह ह़ाल ''मौसूफ़'' को तक्लीफ़ पहुंचाने की वजह से हुवा है ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या आप को नहीं मा'लूम कि

अल्लाह तआ़ला के कई अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام (जो बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में यक़ीनन व क़त़्अ़न मक़्बूल थे) को कुफ़्फ़ार ने शहीद किया, उन्हें त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतें दीं मगर **अल्लाह** तआ़ला ने उन कुफ़्फ़ार को मोहलत दी और बा'ज़ों को दुन्या में सज़ा नहीं दी फिर उन में से बा'ज़ तो इस्लाम के दामन में भी आ गए और दुन्या व आख़िरत की सज़ा से बच गए। तो क्या आप ख़ुद को **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام से भी ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ समझ बैठे हैं कि रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ ने आप का "इन्तिक़ाम" तो ले लिया मगर उन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का कोई इन्तिक़ाम नहीं लिया ! ऐन मुम्किन है कि आप ख़ुद इस ख़ुद पसन्दी और **तकब्बुर** की वजह से ग़-ज़बे जब्बार عَزَّوَجَلَّ के शिकार हो कर अ़ज़ाब के ह़क़दार क़रार पा चुके हों और आप को इस की ख़बर भी न हो।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़क़ीक़ी इबादत गुज़ार बन्दों के म-दनी किरदार की चन्द झ-लकियां मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये और अपनी इस्लाह़ का सामान कीजिये !

लोगों की तक्लीफ़ों का सबब मैं हूं !

जब कभी आंधी चलती या बिजली गिरती तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा सु-लमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते : लोगों को जो तक्लीफ़ पहुंचती है इस का सबब मैं हूं, अगर **अ़त़ा** फ़ौत हो जाए तो लोगों की जान इस मुसीबत से छूट जाए। (احیاالعلوم، ج۳، ص۴۲۹)

तुम्हें तअ़ज्जुब नहीं होना चाहिये

ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन मन्सूर علیه رحمة الله الغفور उन लोगों में से थे जिन को देख कर **अल्लाह** तआ़ला और आख़िरत का घर याद आता था क्यूं कि वोह इबादत की पाबन्दी करते थे, चुनान्चे

आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने एक दिन त़वील नमाज़ पढ़ी, एक शख़्स पीछे खड़ा देख रहा था, **ह़ज़रते** सय्यिदुना बिश्र رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ को मा'लूम हो गया आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने नमाज़ से सलाम फैरा तो आ़जिज़ी करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "जो कुछ तुम ने मुझ से देखा है इस से तुम्हें तअ़ज्जुब नहीं होना चाहिये, क्यूं कि शैत़ाने लईन ने फ़िरिश्तों के हमराह एक त़वील अ़र्से तक इ़बादत की फिर उस का जो **अन्जाम** हुवा वोह वाज़ेह़ है।"

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم الکبر والعجب، فصل بیان ذم العجب وآفاته، ج۳، ص۴۵۳)

दूसरा इमाम तलाश कर लो

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने एक गुरौह को नमाज़ पढ़ाई, जब नमाज़ से सलाम फैरा तो फ़रमाया : "कोई दूसरा **इमाम** तलाश करो या अकेले अकेले नमाज़ पढ़ो, क्यूं कि मेरे दिल में येह ख़याल पैदा हो गया कि **मुझ से अफ़्ज़ल कोई नहीं है।**"

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم الکبر والعجب، فصل بیان مابه التکبر، ج۳، ص۴۲۸)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन सब पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(3) मालो दौलत

तकब्बुर का एक सबब मालो दौलत और दुन्यावी ने'मतों की फ़िरावानी भी है। जिस के पास कार, बंगला, बेंक बेलेन्स और काम काज के लिये नोकर चाकर हों वोह बा'ज़ अवक़ात **तकब्बुर** की आफ़त में मुब्तला हो जाता है फिर उसे ग़रीब लोग ज़मीन पर रैंगने वाले कीड़े मकोड़ों की त़रह़ ह़क़ीर दिखाई देते हैं (मगर जिसे

अल्लाह तआला बचाए) । बसा अवक़ात इस क़िस्म के मु–तकब्बिराना जुम्ले उस के मुंह से निकलते सुनाई देते हैं : "तुम मेरे मुंह लगते हो ! तुम्हारे जैसे लोग तो मेरी जूतियां साफ़ करते हैं, मैं एक दिन में इतना ख़र्च करता हूं जितना तुम्हारा साल भर का ख़र्च है ।"

मालो दौलत से पैदा होने वाले तकब्बुर का इलाज

मालो दौलत की कसरत के बाइस पैदा होने वाले **तकब्बुर** का इलाज यूं हो सकता है कि इन्सान इस बात का यक़ीन रखे कि एक दिन ऐसा आएगा कि उसे येह सब कुछ यहीं छोड़ कर ख़ाली हाथ दुन्या से जाना है, कफ़न में थेली होती है न क़ब्र में तिजोरी, फिर क़ब्र को नेकियों का नूर रोशन करेगा न कि सोने चांदी की चमक दमक ! अल ग़रज़ येह दौलत फ़ानी है और हिरती फिरती छाउं है कि आज एक के पास तो कल किसी दूसरे के पास और परसों किसी तीसरे के पास ! आज का साहिबे माल कल कंगाल और आज का कंगाल कल मालामाल हो सकता है, तो ऐसी ना पाएदार शै की वजह से **तकब्बुर** में मुब्तला हो कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ को क्यूं नाराज़ किया जाए !

बिला हिसाब जहन्नम में दाख़िला

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : "छ क़िस्म के लोग बग़ैर हिसाब के जहन्नम में दाख़िल होंगे । (1) उ–मरा **ज़ुल्म** की वजह से (2) अ़रब **अ़–सबिय्यत** (या'नी त़रफ़ दारी) की वजह से (3) रईस और सरदार **तकब्बुर** की वजह से (4) तिजारत करने वाले **झूट** की वजह से (5) अहले इल्म **हसद** की वजह से (6) मालदार **बुख़्ल** की वजह से ।"

(كنز العمال، كتاب المواعظ والرقاق......الخ،قسم الاقوال ،الحديث٤٤٠٢٣، ج١٦، ص٣٧)

मालदार इस्लामी भाइयों को चाहिये कि ह़दीसे पाक में बयान कर्दा इस फ़ज़ीलत को ह़ासिल करने की कोशिश करें :

आ़जिज़ी करने वाले दौलत मन्द के लिये ख़ुश ख़बरी

मख़ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''ख़ुश ख़बरी है उस शख़्स के लिये जो तंगदस्ती न होते हुए तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) इख़्तियार करे और अपना माल जाइज़ कामों में ख़र्च करे और मोह़ताज व मिस्कीन पर रह़म करे और अहले इ़ल्म व फ़िक़्ह से मेलजोल रखे।''

(المعجم الكبير، الحديث:٤٦١٦، ج٥، ص٧٢)

मालदार मु-तकब्बिर को अनोखी नसीह़त

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक अमीर को मु-तकब्बिराना चाल चलते हुए देखा तो उस से फ़रमाया कि ऐ अह़मक़! **तकब्बुर** से इतराते हुए नाक चढ़ा कर कहां देख रहा है? क्या उन ने'मतों को देख रहा है जिन का शुक्र अदा नहीं किया गया या उन ने'मतों को देख रहा है जिन का तज़्किरा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अह़काम में नहीं। जब उस ने येह बात सुनी तो मा'ज़िरत करने ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : ''मुझ से मा'ज़िरत न कर बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा कर क्या तूने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना :

وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन में इतराता न चल बेशक हरगिज़ ज़मीन न चीर डालेगा और हरगिज़ बुलन्दी में पहाड़ों को न पहुंचेगा।

(پ١٥، بنی اسرائیل:٣٧)

(الزواجر عن اقتراف الكبائر، ج١، ص١٤٩)

(4) ह़सब व नसब

तकब्बुर का एक सबब **ह़सब व नसब** भी बनता है कि इन्सान अपने आबाओ अजदाद के बल बूते पर अकड़ता और दूसरों को ह़क़ीर जानता है :

ह़सब व नसब की वजह से पैदा होने वाले तकब्बुर का इ़लाज

दूसरों के कारनामों पर घमन्ड करना जहालत है, किसी शाइ़र ने कहा है :

لَئِنْ فَخَرْتَ بِآبَاءٍ ذَوِی شَرَفٍ
لَقَدْ صَدَقْتَ وَلٰكِنْ بِئْسَ مَاوَلَدُوْا

तरजमा : तुम्हारा अपने इ़ज़्ज़त व शरफ़ वाले बाप, दादा पर फ़ख़्र करना तो दुरुस्त है लेकिन उन्हों ने तुझ जैसे को जन कर बुरा किया। (या'नी तेरे आबा ने बड़े बड़े कारनामे सर अन्जाम दिये मगर तेरे जैसा ना ख़लफ़ (जो दूसरों के कारनामों पर फ़ख़्र कर के नाम कमाता है) को जनम दे कर बहुत बुरा काम किया है)

आबाओ अजदाद पर फ़ख़्र मत करो

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "अपने फ़ौत शुदा आबाओ अजदाद पर फ़ख़्र करने वाली क़ौमों को बाज़ आ जाना चाहिये, क्यूं कि वोही जहन्नम का कोएला हैं, या वोह क़ौमें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक गन्दगी के उन कीड़ों से भी ह़क़ीर हो जाएंगी जो अपनी नाक से गन्दगी को कुरेदते हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम से जाहिलिय्यत का **तकब्बुर** और उन का अपने आबा पर फ़ख़्र करना ख़त्म फ़रमा दिया है, अब आदमी मुत्तक़ी व मोमिन होगा या बद बख़्त व बदकार, सब लोग ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُوَالسَّلَام की औलाद हैं और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُوَالسَّلَام को मिट्टी से पैदा किया गया है।"

(جامع الترمذی،الحدیث ۳۹۸۱،ج ۵ص ۴۹۷)

9 पुश्तें जहन्नम में जाएंगी

सुल्त़ाने इन्सो जान, रह़मते आ़-लमियान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''मूसा के ज़माने में दो आदमियों ने बाहम फ़ख़्र किया, उन में से एक (जो कि काफ़िर था) ने कहा **''मैं फ़ुलां का बेटा फ़ुलां हूं''** इस त़रह़ वोह नव पुश्तें शुमार कर गया। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह्य भेजी कि ''उस से फ़रमा दीजिये कि वोह नव की नव पुश्तें (कुफ़्र की वजह से) **जहन्नम** में जाएंगी और तुम उन के साथ **दसवें** होगे।''

(المعجم الكبير،الحديث ٢٨٥،ج ٢٠ ص ١٤٠،ملخصًا)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) हुस्नो जमाल

तकब्बुर का पांचवां सबब **हुस्नो जमाल** है कि बा'ज़ अवक़ात इन्सान अपनी ख़ूब सूरती की वजह से **मु-तकब्बिर** हो जाता है, किसी का रंग गोरा है तो वोह काले रंग वाले को, कोई क़द आवर है तो वोह छोटे क़द वाले को, किसी की आंखें बड़ी बड़ी हैं तो वोह छोटी आंखों वाले को ह़क़ीर समझना शुरूअ़ कर देता है, उ़मूमन येह बीमारी मर्दों की निस्बत औ़रतों में ज़ियादा पाई जाती है।

हुस्नो जमाल की वजह से पैदा होने वाले तकब्बुर के इलाज

(1) हुस्नो जमाल के बाइ़स पैदा होने वाले **तकब्बुर** का इलाज करने के लिये अपनी इब्तिदा और इन्तिहा पर ग़ौर कीजिये कि मेरा आग़ाज़ नापाक नुत़्फ़ा (या'नी गन्दा क़त़रा) और अन्जाम सड़ा हुवा मुर्दा है। उ़म्र के हर दौर में हुस्न यक्सां नहीं रहता बल्कि वक़्त गुज़रने के साथ साथ मांद पड़ जाता है, कभी कोई ह़ादिसा भी इस हुस्न के ख़ातिमे का सबब बन जाता है, खौलता हुवा तेल तो

बहुत बड़ी चीज़ है, उबलता हुवा दूध भी सारे हुस्न को ग़ारत करने के लिये काफ़ी है। येह भी पेशे नज़र रहे कि इन्सान जब तक दुन्या में रहता है अपने जिस्म के अन्दर मुख़्तलिफ़ गन्दगियां म-सलन पेट में पाख़ाना व पेशाब और रीह़ (या'नी बदबूदार हवा), नाक में रींठ, मुंह में थूक, कानों में बदबूदार मैल, नाख़ुनों में मैल, आंखों में कीचड़ और पसीने से बदबूदार बग़लें लिये फिरता है, रोज़ाना कई कई बार इस्तिन्जा ख़ाने में अपने हाथ से पाख़ाना व पेशाब साफ़ करता है, क्या इन सब चीज़ों के होते हुए फ़क़त गोरी रंगत, डेलडोल और क़द व क़ामत नीज़ चौड़े चकले सीने वग़ैरा पर **तकब्बुर** करना ज़ैब देता है ! यक़ीनन नहीं। **ह़ज़रते सय्यिदुना अह़नफ़** बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "आदमी पर तअ़ज्जुब है कि वोह **तकब्बुर** करता है ह़ालां कि वोह दो मर्तबा पेशाब गाह से निकला है।" (الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج۱، ص ۱٤۹) **ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "आदमी पर तअ़ज्जुब है कि वोह रोज़ाना एक या दो मर्तबा अपने हाथ से नापाकी धोता है फिर भी ज़मीन व आस्मान के बादशाह (या'नी अल्लाह तआ़ला) से मुक़ाबला करता है।" (ایضاً)

ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नसीह़त

ह़ज़रते लुक़्मान ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने बेटे को नसीह़त करते हुए इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मेरे बेटे ! उस शख़्स को **तकब्बुर** करना किस त़रह़ रवा (या'नी जाइज़) है जिस की अस्ल येह है कि उसे पाउं से रौंदा गया है या'नी उस का ख़मीर मिट्टी है और क्यूंकर **तकब्बुर** करता है जब कि उस की अस्ल एक गन्दा क़त़रा है।" (الحدیقۃ الندیۃ، ج۱، ص ۵۷۹)

ह़ज़रते अबू ज़र और ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सियाह रंग पर आ़र (या'नी शर्म)

दिलाई, उन्हों ने रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में शिकायत की तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इस की तस्दीक़ करने के बा'द इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ अबू ज़र (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! तुम्हारे दिल में अभी तक जाहिलिय्यत के **तकब्बुर** में से कुछ बाक़ी है।'' येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने आप को ज़मीन पर गिरा दिया और क़सम खाई कि जब तक ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इन के रुख़्सार को अपने क़दमों से नहीं रौंदेंगे वोह अपना सर नहीं उठाएंगे। चुनान्चे उन्हों ने सर न उठाया ह़त्ता कि ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इस त़रह़ का अ़मल किया।

(شرح صحیح البخاری لابن بطّال،باب السلام من الاسلام، ج۱،ص۸۷)

ह़ुस्न वाला नजात पाएगा..... मगर कब ?

(2) ह़सीनो जमील होते हुए भी आ़जिज़ी इख़्तियार कीजिये और इस फ़ज़ीलत के ह़क़दार बनिये। शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : ''जो ह़सीनो जमील और शरीफ़ुल अस्ल (या'नी ऊंचे ख़ानदान वाला) होने के बा वुजूद मुन्कसिरुल मिज़ाज होगा तो वोह उन लोगों में से होगा जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन नजात अ़त़ा फ़रमाएगा।''

(حلیة الاولیاء،رقم:۳۷۷۷، ج۳،ص۲۲۲)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) काम्याबियां

इन्सान की ज़िन्दगी काम्याबी व नाकामी की दास्तान है, जब मुसल्सल काम्याबियां बा'ज़ इस्लामी भाइयों के क़दम चूमती हैं तो वोह पै दर पै नाकामियों के शिकार होने वाले दुखियारों को ह़क़ीर समझना शुरूअ़ कर देते हैं, ख़ुद को बेह़द तजरिबा कार

गरदानते हुए उन्हें बे वुक़ूफ़, नादान, गधा और न जाने कैसे कैसे अल्क़ाबात से नवाज़ते हैं।

काम्याबियों की वजह से पैदा होने वाले तकब्बुर का इलाज

काम्याबियों पर फूले न समा कर जामे से बाहर होने वालों को येह नहीं भूलना चाहिये कि वक़्त हमेशा एक सा नहीं रहता, बुलन्दियों पर पहुंचने वालों को अक्सर वापस पस्ती में भी आना पड़ता है, हर कमाल को ज़वाल है। आप को काम्याबी मिली इस पर **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र कीजिये न कि अपना कमाल तसव्वुर कर के ना शुक्रों की सफ़ में खड़े होने की जसारत ! फिर जिसे आप "काम्याबी" समझ रहे हैं उस का सफ़र दुन्या से शुरूअ़ हो कर दुन्या ही में ख़त्म हो जाता है, ह़क़ीक़ी काम्याब तो वोह है जो क़ब्रो ह़श्र में काम्याब हो कर रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ के साए में **जन्नत** में दाख़िल हो गया, जैसा कि पारह 28 सूरए तग़ाबुन की आयत 9 में इर्शादे इलाही عَزَّوَجَلَّ है :

وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छा काम करे अल्लाह उस की बुराइयां उतार देगा और उसे बाग़ों में ले जाएगा जिन के नीचे नहरें बहें कि वोह हमेशा उन में रहें येही **बड़ी काम्याबी** है।

(پ۲۸ التغابن ۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(7) त़ाक़त व क़ुव्वत

तकब्बुर का एक सबब त़ाक़त व क़ुव्वत भी है, जिस का क़द काठ निकलता हुवा हो, बाज़ूओं की मछलियां फड़कें और सीना चौड़ा हो तो वोह बसा अवक़ात कमज़ोर जिस्म वाले को ह़क़ीर समझना शुरूअ़ कर देता है।

ताक़त व कुव्वत की वजह से पैदा होने वाले तकब्बुर का इलाज

ताक़त व कुव्वत से पैदा होने वाले **तकब्बुर** का इलाज करने के लिये यूं फ़िक्रे मदीना कीजिये कि कुव्वत व फुरती तो चौपायों और दरिन्दों में भी होती है बल्कि उन में इन्सान से ज़ियादा ताक़त होती है तो फिर अपने अन्दर और जानवरों में ''मुश्तरक'' सिफ़त पर **तकब्बुर** क्यूं किया जाए ! हालां कि हमारे जिस्म की ना तुवानी का तो येह हाल है कि अगर एक दिन बुख़ार आ जाए तो ताक़त व कुव्वत का सारा नशा उतर जाता है, मा'मूली सी गरमी में ज़रा पैदल चलना पड़े तो पसीने से शराबूर हो कर निढाल हो जाते हैं, सर्द हवा चले तो कपकपाने लगते हैं। बड़ी बीमारियां तो बड़ी ही होती हैं इन्सान की डाढ़ में अगर दर्द हो जाए तो उस वक़्त ख़ूब अन्दाज़ा हो जाता है कि उस की ताक़त व कुव्वत की हैसिय्यत क्या और कितनी है ! फिर जब मौत आएगी तो येह सारी ताक़त व कुव्वत धरी की धरी रह जाएगी और बे बसी का आलम येह होगा कि अपनी मरज़ी से हाथ तो क्या उंगली भी नहीं हिला सकेंगे । लिहाज़ा मेरे मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ऐसी आरिज़ी कुव्वत पर नाज़ां होना हमें ज़ैब नहीं देता।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(8) ओहदा व मन्सब

कभी ओहदा व मन्सब की वजह से भी इन्सान **तकब्बुर** का शिकार हो जाता है।

ओहदा व मन्सब की वजह से पैदा होने वाले तकब्बुर का इलाज

ऐसे इस्लामी भाइयों को चाहिये कि अपना ज़ेहन बनाएं कि फ़ानी पर फ़ख़्र नादानी है, इज़्ज़त व मन्सब कब तक साथ देंगे, जिस मन्सब के बल बूते पर आज अकड़ते हैं कल कलां को छिन गया तो शायद उन्ही लोगों से मुंह छुपाना पड़े जिन से आज तहक़ीर

आमेज़ सुलूक करते हैं, आज जिन पर हुक्म चलाते हैं रीटायर्मेन्ट के दूसरे दिन उन्ही की ख़िदमत में हाज़िर हो कर पेन्शन केस निपटवाना है ! अल ग़रज़ फ़ानी चीज़ों पर **ग़ुरूर व तकब्बुर** क्यूंकर किया जाए ! इस लिये कैसा ही बड़ा मन्सब या **ओ़हदा** मिल जाए अपनी औक़ात नहीं भूलनी चाहिये। **आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "**आदमी** को अपनी ह़ालत का लिह़ाज़ ज़रूर है न कि अपने को **भूले** या सताइशे मरदुम (या'नी आदमियों के ता'रीफ़ करने) पर **फूले** ।"

(ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت ص٦٦)

"आ़जिज़ी" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 ह़िकायात

(1) अपनी औक़ात याद रखता हूं

अयाज़, सुल्त़ान **मह़मूद** ग़ज़्नवी का एक अदना ग़ुलाम था फिर तरक़्क़ी करते करते उस का मह़बूब तरीन वज़ीर बन गया। अयाज़ की काम्याबियां ह़ासिदीन दरबारियों को एक आंख न भाती थीं। वोह मौक़अ़ की ताक में रहते थे कि किसी त़रह़ **अयाज़** को **मह़मूद** की नज़रों से गिरा दें। आख़िरे कार उन्हें एक मौक़अ़ मिल ही गया। हुवा यूं कि **अयाज़** का मा'मूल था कि रोज़ाना मख़्सूस वक़्त में एक कमरे में चला जाता और कुछ देर गुज़ार कर वापस आ जाता। दरबारियों ने **मह़मूद** के कान भरना शुरूअ़ किये कि ज़रूर **अयाज़** ने शाही ख़ज़ाने में ख़ुर्द बुर्द कर के माल जम्अ़ कर रखा है जिसे देखने के लिये कमरए ख़ास में जाता है, वोह उस कमरे को ताला लगा कर रखता है और किसी और को अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त नहीं देता। **मह़मूद** को अगर्चे अयाज़ पर मुकम्मल ए'तिमाद था मगर दरबारियों को मुत्मइन करने के लिये एक वज़ीर को कहा कि उस कमरे का ताला तोड़ डालो, वहां जो कुछ मिले वोह तुम्हारा है। वज़ीर और दीगर दरबारी ख़ुशी ख़ुशी अयाज़ के कमरे में जा घुसे। मगर येह

क्या ! वहां एक पुराने बोसीदा लिबास और चप्पलों के सिवा कुछ था ही नहीं। दरबारियों की आंखें फटी की फटी रह गईं। **महमूद** ने **अयाज़** से उन कपड़ों और चप्पलों के बारे में दरयाफ़्त किया तो उस ने बताया कि येह मेरी ग़ुलामी के दौर की यादगार हैं जिन्हें देख कर मैं अपनी औक़ात याद रखता हूं और ख़ुद को मौजूदा उ़रूज पर **तकब्बुर** में मुब्तला नहीं होने देता। येह सुन कर **महमूद** अपने वफ़ादार ख़ादिम **अयाज़** से और ज़ियादा मु-तअस्सिर नज़र आने लगा और दरबारियों का मुंह काला हुवा।

(مثنوی مولانا روم (مترجم)، دفتر پنجم، ص ۴۵، ملخصا)

(2) सारी सल्तनत की क़ीमत एक गिलास पानी

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 540 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**" सफ़ह़ा 376 पर है : ह़ज़रते ख़लीफ़ा हारून रशीद رَحمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیہ उ़-लमा दोस्त थे। दरबार में उ़-लमा का मज्मअ़ हर वक़्त लगा रहता था। एक मर्तबा पानी पीने के वासित़े मंगाया, मुंह तक ले गए थे, पीना चाहते थे कि एक आ़लिम साह़िब ने फ़रमाया : "अमीरुल मुअमिनीन ! ज़रा ठहरिये ! मैं एक बात पूछना चाहता हूं।" फ़ौरन ख़लीफ़ा ने हाथ रोक लिया। उन्हों ने फ़रमाया : "अगर आप जंगल में हों और पानी मुयस्सर न हो और प्यास की शिद्दत हो तो इतना पानी किस क़दर क़ीमत दे कर ख़रीदेंगे ?" फ़रमाया : "**वल्लाह !** आधी सल्तनत दे कर।" फ़रमाया : "बस पी लीजिये !" जब ख़लीफ़ा ने पी लिया, उन्हों ने फ़रमाया : "अब अगर येह पानी निकलना चाहे और न निकल सके (या'नी पेशाब ही बन्द हो जाए) तो किस क़दर क़ीमत दे कर इस का निकलना मोल (या'नी ख़रीद) लेंगे ?" कहा : **वल्लाह** ! पूरी सल्तनत दे कर। इर्शाद फ़रमाया : "बस आप की सल्तनत की येह ह़क़ीक़त है कि एक

मर्तबा एक चुल्लू पानी पर आधी बिक जाए और दूसरी बार पूरी । इस (हुकूमत) पर जितना चाहे **तकब्बुर** कर लीजिये !''

(تاریخ الْخُلَفَا ،ص۲۹۳ملخصاً)

(3) सालारे लश्कर को नसीहत

ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़र्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक लश्कर के सिपह सालार ''मुहल्लब'' को रेशमी जुब्बे में मल्बूस अकड़ कर चलते हुए देखा तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल को येह चाल पसन्द नहीं । उस ने जवाबन कहा : क्या तुम मुझे पहचानते नहीं कि मैं कौन हूं ! फ़रमाया : क्यूं नहीं, मैं तुम्हें ख़ूब पहचानता हूं, तुम्हारा आग़ाज़ एक बदलने वाला नुत़फ़ा (या'नी गन्दा क़त़रा), अन्जाम बदबूदार मुर्दा और दरमियानी वक़्फ़े (या'नी ज़िन्दगी भर पेट) में गन्दगी उठाए फिरना है । येह सुन कर ''मुहल्लब'' (शरमिन्दा हो कर) चला गया और उस ने येह चाल छोड़ दी । (اِحْیَاءُ الْعُلُوْم ج ۳ ص۴۱۷ دارصادربیروت)

(4) बुलन्दी चाहने वाले की रुस्वाई

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''मैं ने कोहे सफ़ा के क़रीब एक शख़्स को ख़च्चर पर सुवार देखा, कुछ गुलाम उस के सामने से लोगों को हटा रहे थे, फिर मैं ने उसे बग़दाद में इस ह़ालत में पाया कि वोह नंगे पाउं और ह़सरत ज़दा था नीज़ उस के बाल भी बहुत बढ़े हुए थे, मैं ने उस से पूछा : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ?'' तो उस ने जवाब दिया : ''मैं ने ऐसी जगह बुलन्दी चाही जहां लोग आ़जिज़ी करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ऐसी जगह रुस्वा कर दिया जहां लोग रिफ़्अ़त (या'नी बुलन्दी) पाते हैं ।''

(الزواجرعن اقتراف الکبائر،ج۱،ص ۱۶۴)

(5) मेरे मक़ाम में कोई कमी तो नहीं आई

एक रात ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हां कोई मेहमान आया, आप कुछ लिख रहे थे। क़रीब था कि चराग़ बुझ जाता। मेहमान ने अ़र्ज़ की मैं उठ कर ठीक कर देता हूं तो आप ने फ़रमाया : मेहमान से ख़िदमत लेना अच्छी बात नहीं है। उस ने कहा ग़ुलाम को जगा दूं ? फ़रमाया : वोह अभी अभी सोया है। फिर आप ख़ुद उठे और कुप्पी ले कर चराग़ में तेल भर दिया। मेहमान ने कहा : या अमीरल मुअमिनीन ! आप ने ख़ुद ज़ाती त़ौर पर येह काम किया ? फ़रमाया : जब मैं (इस काम के लिये) गया तो भी उ़मर था और जब वापस आया तो भी उ़मर ही था, मेरे मक़ाम में कोई कमी नहीं आई और बेहतरीन आदमी वोह है जो **अल्लाह** तआ़ला के हां तवाज़ोअ़ करने वाला हो। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم الکبر والعجب، ج۳، ص۴۳۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन علیہ رحمۃ اللہ المبین मक़ाम व मर्तबा और ओ़हदा व मन्सब मिलने के बा वुजूद किस क़दर आ़जिज़ी फ़रमाया करते थे !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तकब्बुर के मज़ीद इलाज

(1) बारगाहे इलाही में ह़ाज़िरी को याद रखिये

इस त़रह़ "**फ़िक्रे मदीना**" (या'नी मुह़ा-सबा) कीजिये कि कल जब ह़श्र बपा होगा और हर एक अपने किये का ह़िसाब देगा तो मुझे भी अपने रब्बे जुल जलाल की बारगाह में अपने आ'माल का ह़िसाब देना पड़ेगा, उस वक़्त मैं इन्तिहाई इ़ज्ज़, ज़िल्लत

और पस्ती की जगह पर होउंगा। अगर मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मुझ से नाराज़ हुवा तो मेरा क्या बनेगा ? अगर **तकब्बुर** के सबब मुझे जहन्नम में फेंक दिया गया तो वोह होलनाक अ़ज़ाब क्यूंकर बरदाश्त कर पाऊंगा ? इस त़रह़ तसव्वुर में अ़ज़ाब को याद करने की वजह से इन्किसारी पैदा होगी। इन तमाम बातों को सोच कर اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ **तकब्बुर** दूर हो जाएगा, और बन्दा ख़ुद को **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में ह़क़ीर व आ़जिज़ ख़याल करेगा।

(2) दुआ़ कीजिये

तकब्बुर से नजात पाने के लिये "मोमिन के हथियार" या'नी दुआ़ को इस्ति'माल कीजिये और बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ से कुछ इस त़रह़ दुआ़ मांगिये : "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं नेक बनना चाहता हूं, **तकब्बुर** से जान छुड़ाना चाहता हूं मगर नफ़्सो शैत़ान ने मुझे दबा रखा है, ऐ मेरे मालिक मुझे इन के मुक़ाबले में काम्याबी अ़त़ा फ़रमा, मुझे नेक बना दे, आ़जिज़ी का पैकर बना दे।" اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

गुनाहों की आ़दत छुड़ा या इलाही عَزَّوَجَلَّ
मुझे नेक इन्सां बना या इलाही عَزَّوَجَلَّ

(3) अपने उ़यूब पर नज़र रखिये

तकब्बुर से बचने के लिये अपने उ़यूब पर नज़र रखना बहुत मुफ़ीद है और अपनी आ़दात व अत़्वार को तक़्वा की छलनी से गुज़ारना उ़यूब व नक़ाइस की पहचान के लिये बहुत मुआ़विन है। दाफ़ेए़ रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा कमाल है : "अ़नक़रीब मेरी उम्मत को पिछली उम्मतों की बीमारी लाह़िक़ होगी।" सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : "पिछली उम्मतों की बीमारी क्या है ?" तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**तकब्बुर** करना, इतराना, कसरत से माल जम्अ़

करना और दुन्या में एक दूसरे पर सब्क़त ले जाना नीज़ आपस में बुग़्ज़ो ह़सद रखना, बुख़्ल करना, यहां तक कि वोह ज़ुल्म में तब्दील हो जाए और फिर फ़ितना व फ़साद बन जाए।"

(المعجم الاوسط، الحدیث:۹۰۱۶، ج۶،ص۳۴۸)

(4) नुक़्सानात पेशे नज़र रखिये

मोहलिकात का एक इ़लाज येह भी है कि जब किसी मोहलिक के दरपेश होने का अन्देशा हो तो उस के नुक़्सानात व अ़ज़ाबात पर ख़ूब ग़ौर करे ताकि अपने अन्दर उस मोहलिक (या'नी हलाक करने वाले अ़मल) से बचने का जज़्बा पैदा हो।

(5) आ़जिज़ी इख़्तियार कर लीजिये

अपने दिल से **तकब्बुर** की गन्दगी को साफ़ करने के लिये आ़जिज़ी का पानी इस्ति'माल करना बेह़द मुफ़ीद है, ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "तवाज़ोअ़ (या'नी आ़जिज़ी) इख़्तियार करो और मिस्कीनों के साथ बैठा करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बड़े मर्तबे वाले बन्दे बन जाओगे और **तकब्बुर** से भी बरी हो जाओगे।"

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، الحدیث:۵۷۲۲،ج۳،ص۴۹)

ख़िन्ज़ीर से बदतर

ग़ुरूर व तकब्बुर ने न किसी को शाइस्तगी बख़्शी है और न किसी को अ़-ज़-मतो सर बुलन्दी की चोटी पर पहुंचाया है, हां ! ज़िल्लत की पस्तियों में ज़रूर गिराया है जैसा कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी इख़्तियार करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बुलन्दी अ़ता फ़रमाएगा, पस वोह ख़ुद को कमज़ोर समझेगा मगर लोगों की नज़रों में अ़ज़ीम होगा और जो **तकब्बुर** करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ज़लील कर देगा, पस वोह लोगों की नज़रों में छोटा होगा मगर ख़ुद को

बड़ा समझता होगा यहां तक कि वोह लोगों के नज़्दीक कुत्ते और ख़िन्ज़ीर से भी बदतर हो जाता है।''

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق ، قسم الاقوال، الحدیث:٥٧٣٤،ج٣،ص٥٠)

हर एक के सर में लगाम

एक और जगह फ़रमाने आ़लीशान है : ''हर इन्सान के सर में एक लगाम होती है जो एक फ़िरिश्ते के हाथ में होती है, जब बन्दा तवाज़ोअ़ करता है तो उस लगाम के ज़रीए उसे बुलन्दी अ़ता की जाती है और फ़िरिश्ता कहता है : ''बुलन्द हो जा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे बुलन्द फ़रमाए।'' और अगर वोह अपने आप को (तकब्बुर से) ख़ुद ही बुलन्द करता है तो वोह उसे ज़मीन की जानिब पस्त (या'नी नीचा) कर के कहता है : ''पस्त (या'नी नीचा) हो जा ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे पस्त करे।''

(کنزالعمال، کتاب الاخلاق،قسم الاقوال،باب التواضع، الحدیث:٥٧٤١،ج٣،ص٥٠)

क्या येह भी मुझ से बेहतर हो सकता है !

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى इस क़दर **मुन्कसिरुल मिज़ाज** थे कि हर फ़र्द को अपने से बेहतर तसव्वुर करते। इस का सबब येह हुवा कि एक दिन दरियाए दिजला पर किसी ह़बशी को औ़रत के साथ इस त़रह़ शराब नोशी में मुब्तला देखा कि शराब की बोतल उस के सामने थी। उस वक़्त आप को येह तसव्वुर हुवा कि क्या येह भी मुझ से बेहतर हो सकता है ? क्यूं कि येह तो शराबी है। इसी दौरान एक कश्ती सामने आई जिस में सात अफ़राद थे और वोह ग़रक़ हो गई, येह देख कर ह़बशी पानी में कूद गया और छ अफ़राद को एक एक कर निकाला। फिर आप से अ़र्ज़ किया : आप सिर्फ़ एक ही की जान बचा लें। मैं तो येह इम्तिह़ान ले रहा था कि आप की चश्मे बातिन खुली हुई है या नहीं ! और येह औ़रत जो मेरे पास है, मेरी वालिदा हैं और इस बोतल

में सादा पानी है। येह सुनते ही आप इस यक़ीन के साथ कि येह तो कोई ग़ैबी शख़्स है उस के क़दमों में गिर पड़े और ह़बशी से कहा कि जिस त़रह़ तूने छ अफ़राद की जान बचाई इसी त़रह़ **तकब्बुर** से मेरी जान भी बचा दे। उस ने दुआ़ की, कि **अल्लाह** तआ़ला आप को नूरे बसीरत अ़त़ा फ़रमाए या'नी किब्रो नख़्वत को दूर कर दे। चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि इस के बा'द अपने आप को कभी बेहतर तसव्वुर नहीं किया।

(تذکرۃ الاولیاء فارسی،ص٤٣)

आ़जिज़ी का एक पहलू

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : "तवाज़ोअ़ येह है कि जब तुम अपने घर से निकलो तो जिस मुसल्मान से भी मिलो उसे अपने आप से अफ़्ज़ल जानो।"

(الزواجر عن اقتراف الکبائر،ج١،ص١٦٣)

मैं सब से बुरा हूं निगाहे करम हो मगर आप का हूं निगाहे करम हो

आ़जिज़ी किस ह़द तक की जाए ?

दीगर अख़्लाक़ी आ़दात की त़रह़ **आ़जिज़ी** में भी ए'तिदाल रखना बहुत ज़रूरी है क्यूं कि अगर **आ़जिज़ी** में बिला ज़रूरत ज़ियादती की तो ज़िल्लत और कमी की तो **तकब्बुर** में जा पड़ने का ख़दशा है। लिहाज़ा इस ह़द तक आ़जिज़ी की जाए जिस में ज़िल्लत और हलका पन न हो। (احیاء العلوم ،ج٣،ص ٤٥١)

(6) सलाम में पहल कीजिये

हर मुसल्मान को अमीर हो या ग़रीब, बड़ा हो या छोटा सलाम में पहल कीजिये। हमारे **म-दनी आक़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो बच्चों को भी सलाम में पहल फ़रमाया करते थे। ह़ज़रते सय्यिदुना

अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ चन्द लड़कों के पास से गुज़रे तो उन को सलाम किया, फिर फ़रमाया : ''रसूलुल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ भी इसी त़रह़ किया करते थे।''

(صحیح البخاری ،کتاب الاستئذان،باب تسلیم علی الصبیان،الحدیث٦٢٤٧،ج٤،ص١٧٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किस क़दर **मुन्कसिरुल मिज़ाज** हैं कि छोटों को भी सलाम में पहल किया करते हैं। काश ! हम भी अगर बड़े हैं तो छोटों के पहल करने का इन्तिज़ार किये बग़ैर सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **आ़जिज़ी वाली सुन्नत** ''पहले सलाम करना'' अदा कर लिया करें।

तेरी सादगी पे लाखों, तेरी आ़जिज़ी पे लाखों
हों सलामे आ़जिज़ाना म-दनी मदीने वाले

सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से बरी है

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं, फ़रमाया : ''पहले सलाम कहने वाला **तकब्बुर** से बरी है।'' (شعب الایمان،باب فی مقاربة وموادة اهل الدین،الحدیث٨٧٨٦،ج٦،ص٤٣٣)

क़ुर्बे इलाही का ह़क़दार

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की गई : ''या रसूलल्लाह عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمْ ! जब दो शख़्स मुलाक़ात करें तो पहले कौन सलाम करे ?'' फ़रमाया : ''पहले सलाम करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़ियादा क़रीब होता है।''

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان والاداب ،الحدیث٢٧٠٣،ج٤،ص٣١٨)

आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की सलाम में पहल की आ़दते मुबा-रका

ह़ज़रते मौलाना सय्यिद अय्यूब अ़ली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡقَوِی का बयान है कि "कोहे भवाली से मेरी त़-लबी फ़रमाई जाती है," मैं ब हमराही शहज़ादए अस्ग़र (हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द) ह़ज़रते मौलाना मौलवी शाह मुह़म्मद मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ां साह़िब مد ظلہ الاقدس, बा'दे मग़रिब वहां पहुंचता हूं, शहज़ादा मम्दूह़ (या'नी जिस की ता'रीफ़ की जाए) अन्दर मकान में जाते हुए येह फ़रमाते हैं : "अभी हुज़ूर को आप के आने की इत्तिलाअ़ करता हूं।" मगर बा वुजूद इस आगाही के कि हुज़ूर (या'नी इमामे अहले सुन्नत शाह मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن) तशरीफ़ लाने वाले हैं, तक़्दीमे सलाम सरकार (या'नी सलाम में पहल आ'ला ह़ज़रत) ही फ़रमाते हैं, उस वक़्त देखता हूं कि हुज़ूर बिल्कुल मेरे पास जल्वा फ़रमा हैं।" (حیاتِ اعلیٰ حضرت، ج۱، ص۹۶)

आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की आ़दते करीमा

اَلۡحَمۡدُلِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी مَدَّ ظِلُّہُ الۡعَالِی भी ह़त्तल मक़्दूर मिलने वालों से सलाम में पहल फ़रमाते हैं। एक म-दनी इस्लामी भाई का बयान है कि मैं ने बारहा कोशिश की, कि मैं अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ को पहले सलाम करूं मगर आप دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की आ़दते करीमा की वजह से बहुत कम मवाक़ेअ़ पर ऐसा करने में काम्याब हो सका।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ'ला ह़ज़रत और अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الۡاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(7) अपना सामान ख़ुद उठाइये

शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जिस ने अपना सामान ख़ुद उठा लिया वोह **तकब्बुर** से आज़ाद हो गया।"

(شعب الایمان، باب فی حسن الخلق، فصل فی التواضع، الحدیث: ۸۲۰۱، ج٦، ص۲۹۲)

(8) इन आ'माल को इख़्तियार कीजिये

महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानिय्यत عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बराअत निशान है : "ऊन का लिबास पहनना, मोमिन फ़ु-क़रा की सोहबत में बैठना, दराज़ गोश (गधे) पर सुवारी करना और बकरी को रस्सी से बांध देना **तकब्बुर** से बराअत (या'नी छुटकारे) के अस्बाब हैं।"

(شعب الایمان، باب فی الملابس والاوانی، الحدیث ٦١٦١، ج٥، ص١٥٣)

बकरी की खाल पर बैठने की ब-र-कत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ़ 1250 स-फ़हात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल हिस्सा 2 सफ़हा 403 पर है : "बकरी और मेंढे की (पकाई हुई या'नी मख़्सूस त़रीक़े से ख़ुश्क की हुई) खाल पर बैठने और पहनने से मिज़ाज में नरमी और इन्किसार पैदा होता है।" (بہارشریعت، جلداوّل، ص٤٠٣) اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने बैठने की जगह पर उ़मूमन बकरी की (ख़ुश्क की हुई) खाल बिछाने का एहतिमाम फ़रमाते हैं बल्कि बयान के दौरान भी अक्सर अवक़ात आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की फ़र्शी चटाई पर बकरी की खाल बिछी हुई होती है। मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप भी कोशिश कर के अपने बैठने की जगह पर बकरी या मेंढे की

(खुश्क की हुई) खाल बिछा लीजिये और इस की ब-र-कतों का खुली आंखों से नज़ारा कीजिये।

(9) स-दक़ा दीजिये

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुसल्मान का स-दक़ा उ़म्र में ज़ियादती का सबब है और बुरी मौत से बचाता है और **अल्लाह** तआ़ला इस की वजह से **तकब्बुर** व फ़ख़्र को दूर फ़रमा देता है।"

(مجمع الزوائد ،کتاب الزکاۃ، باب فضل الصدقۃ، رقم ٤٦٠٩،ج ٣، ص ٢٨٤)

(10) ह़क़ बात तस्लीम कर लीजिये

जब किसी हम अ़स्र से इख़्तिलाफ़े राय हो, फिर आप पर खुल जाए कि वोह ह़क़ पर है तो ज़िद करने के बजाए सरे तस्लीम ख़म कर लीजिये। फिर उस के सामने इस बात का ए'तिराफ़ करते हुए बयाने ह़क़ पर उस की ता'रीफ़ भी कीजिये कि "आप दुरुस्त फ़रमा रहे हैं **अल्लाह** तआ़ला आप को जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमाए।" ए'तिराफ़े ह़क़ का येह इक़रार अगर्चे नफ़्स पर बहुत बहुत बहुत गिरां है, मगर मुसल्सल ऐसा करते रहने से ह़क़ का ए'तिराफ़ करना आप की आ़दत बन जाएगी और इस की ब-र-कत से **तकब्बुर** से भी जान छूटती चली जाएगी।

(11) अपनी ग़-लत़ी मान लीजिये

इन्सान ख़त़ा और भूल का मुरक्कब है लिहाज़ा जब भी कोई आप की किसी ग़-लत़ी की निशान देही करे अपनी ग़-लत़ी मान लीजिये चाहे वोह उ़म्र, तजरिबे और रुत्बे में आप से कम ही क्यूं न हो।

ग़-लत़ी का ए'तिराफ़

जलीलुल क़द्र मुह़द्दिस इमाम दारे क़ुत़नी علیہ رحمۃ اللہ الغنی जब

नौ उम्र तालिबे इल्म थे तो एक दिन हज़रते सय्यिदुना इमाम अम्बारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡبَارِیۡ की दर्सगाह में हाज़िर हुए। हदीस लिखवाने में इमाम अम्बारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡبَارِیۡ ने एक रावी के नाम में ग़-लती की, हज़रते सय्यिदुना दारे कुत़नी علیه رحمة الله الغنی कमाले अदब के सबब इमाम अम्बारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡبَارِیۡ को तो टोक नहीं सके मगर उन के मुस्तम्ली को जो उन की आवाज़ शागिर्दों तक पहुंचाता था इस ग़-लती से आगाह कर दिया। जब दूसरे जुमुआ को इमाम दारे कुत़नी علیه رحمة الله الغنی फिर मजलिसे दर्स में गए तो इमाम अम्बारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡبَارِیۡ का जोशे हक़ पसन्दी और बे नफ़्सी का आलम देखिये कि उन्हों ने भरी मजलिस के सामने येह ए'लान फ़रमाया कि उस रोज़ फुलां नाम में मुझ से ग़-लती हो गई थी तो इस नौ जवान तालिबे इल्म ने मुझ को आगाह कर दिया।

(تاریخِ بغداد، ج٣،ص ٤٠٠)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَكَاتُهُمُ الۡعَالِيَه का म-दनी अन्दाज़

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार** क़ादिरी دَامَتۡ بَرَكَاتُهُمُ الۡعَالِيَه को **अल्लाह** तआला ने अपने **हबीब**, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में ऐसे अज़ीमुश्शान औसाफ़ व कमालात से नवाज़ा है कि फ़ी ज़माना इस की मिसाल मिलना मुश्किल है। वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले "**म-दनी मुज़ा-करात**" में इस्लामी भाई मुख़्तलिफ़ क़िस्म के म-सलन अक़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअत व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, मुआशी व मुआ-श-रती व तन्ज़ीमी मुआ-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआत के मु-तअल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَكَاتُهُمُ الۡعَالِيَه उन्हें हिक्मत आमोज़ इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं। इल्म का समुन्दर होने के बा वुजूद आप دَامَتۡ بَرَكَاتُهُمُ الۡعَالِيَه आग़ाज़ में शु-रकाए मु-दनी मुज़ाकरा से कुछ इस त़रह आजिज़ी भरे **अल्फ़ाज़**

इर्शाद फ़रमाते हैं : "आप सुवालात कीजिये, मगर हर सुवाल का जवाब वोह भी बिस्सवाब (या'नी दुरुस्त) दे पाऊं, ज़रूरी नहीं, मा'लूम हुवा तो अ़र्ज़ करने की कोशिश करूंगा। अगर मुझे भूल करता पाएं तो फ़ौरन मेरी इस्लाह़ फ़रमाएं, मुझे अपने मौक़िफ़ पर बे जा अड़ता हुवा नहीं, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ शुक्रिया के साथ रुजूअ़ करता पाएंगे।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمين صلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(12) नुमायां ह़ैसिय्यत के त़ालिब न बनिये

अपने रु-फ़क़ा के साथ हों या किसी मह़फ़िल में, कभी भी दिल में इस ख़्वाहिश को जगह न दीजिये कि मुझे नुमायां ह़ैसिय्यत दी जाए, ऊंची जगह बिठाया जाए, मेरी आव भगत की जाए। हां ! किसी ने अज़् ख़ुद आप को नुमायां जगह पर बैठने की दर-ख़्वास्त की तो क़बूल करने में ह़रज नहीं। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجهَهُ الْكَرِيم कहीं तशरीफ़ फ़रमा हुए। साह़िबे ख़ाना ने ह़ज़रत के लिये मस्नद ह़ाज़िर की, आप رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ उस पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए और फ़रमाया : कोई गधा ही इ़ज़्ज़त की बात क़बूल न करेगा।

(فتاوی رضویہ، ج۲۳، ص۷۱۹)

(13) घर के काम कीजिये

अगर कोई उ़ज़्र न हो तो घर के छोटे मोटे काम ख़ुद कीजिये। घर वालों की ज़रूरत का सामान अपने हाथ से उठा कर बाज़ार से घर तक लाइये।

घर के काम काज करना सुन्नत है

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से मरवी है आप फ़रमाती हैं कि "सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने कपड़े ख़ुद सी लेते और अपने ना'लैन मुबारक गांठते और वोह सारे काम करते जो मर्द अपने घरों में करते हैं।" (الجامع الصغیر،الحدیث۷۰۱۸،ص۴۳۳)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

चीज़ का मालिक उसे उठाने का ज़ियादा ह़क़दार है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं कि मैं सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ बाज़ार गया। एक दुकान से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चार दिरहम का पाएजामा ख़रीदा, जब वापस पलटे तो मैं ने रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیۡہِ اَفۡضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسلیم से पाएजामे को इस ग़रज़ से पकड़ा ताकि उसे मैं उठा लूं, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे मन्अ़ फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : "चीज़ का मालिक उसे उठाने का ज़ियादा ह़क़दार है हां अगर वोह कमज़ोर हो, उसे उठाने से आ़जिज़ हो तो उस का इस्लामी भाई उसे उठाने में उस की मदद करे।"

(تاریخ دمشق لابن عساکر،باب ما ورد فی شعرہ .....الخ،ج٤،ص٢٠٥ ملتقطا)

लकड़ियों का गट्ठा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ एक मर्तबा अपने बाग़ से निकले तो सर पर लकड़ियों का गट्ठा उठा रखा था, किसी ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ से हैरत से पूछा : "आप के हां

तो बेटे और ग़ुलाम मौजूद हैं जो इस काम के लिये काफ़ी हैं।" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं अपने नफ़्स की आज़माइश कर रहा हूं कि येह इस काम से इन्कार तो नहीं करता।" (شرح صحیح البخاری لابن بطال، ج۱۰، ص۲۱٤) तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सिर्फ़ इस इरादे पर इक्तिफ़ा नहीं किया बल्कि इस का अ़-मली तजरिबा भी किया कि "आया ! नफ़्स सच्चा है या झूटा !"

कमाल में कोई कमी नहीं आती

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : अगर कोई कामिल शख़्स अपने घर वालों के लिये कोई चीज़ उठा कर ले जाए तो इस से उस के कमाल में कोई कमी नहीं आती। (احیاء العلوم، ج۳، ص٤۳٥)

इ़याल दार को अपना सामान ख़ुद उठाना मुनासिब है

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं मैं ने अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को देखा कि आप كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने एक दिरहम का गोश्त ख़रीदा और उसे अपनी चादर में उठा लिया, मैं ने अ़र्ज़ की : अमीरुल मुअमिनीन ! मैं उठा कर ले जाता हूं। फ़रमाया : "नहीं, **इ़याल दार आदमी को अपना सामान ख़ुद उठाना मुनासिब है।**" (احیاء العلوم، ج۳، ص٤۳٥)

घर के काम कर दिया करते

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बहुत बड़े आ़लिमे दीन और फ़क़ीह होने के बा वुजूद आ़जिज़ी व इन्किसारी के पैकर थे। ह़दीस शरीफ़ में है : "كَانَ يَكُونُ فِي مِهْنَةِ أَهْلِهِ या'नी

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने घर के काम काज में मश्ग़ूल रहते थे (या'नी घर वालों का काम करते थे)" (صحیح البخاری، کتاب الاذان،باب من کان فی حاجة أهله،الحدیث٦٧٦،ج١،ص٢٤١) इसी सुन्नत पर अ़मल करते हुए सदरुश्शरीअ़ह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ घर के काम काज से आ़र महसूस न फ़रमाते, घर में तरकारियां छीलते, काटते और दूसरे काम भी कर दिया करते थे। (ماہنامہ اشرفیہ،صدرالشریعہ نمبر،ص۵۴،ملخصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इन सब पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(14) ख़ुद मुलाक़ात के लिये जाइये

दूसरों को अपने पास बुलाने के बजाए नफ़्स के **तकब्बुर** को तोड़ने के लिये ह़त्तल इम्कान ख़ुद चल कर मुलाक़ात करने जाइये।

(15) ग़रीबों की दा'वत भी क़बूल कीजिये

सिर्फ़ अमीरों से तअ़ल्लुक़ात बढ़ाने और उन के हां दा'वतों पर जाने के आ़दी न बनिये बल्कि अपने शनासाओं में ग़रीबों को भी शामिल कीजिये और जब वोह आप को दा'वत दें तो क़बूल कीजिये।

ऐसी दा'वत रोज़ क़बूल करूं

एक कमसिन साहिब ज़ादे निहायत ही बे तकल्लुफ़ाना अन्दाज़ में सादगी के साथ आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की

ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : ''मेरी बुवा (या'नी बूढ़ी वालिदा) ने तुम्हारी दा'वत की है, कल सुब्ह़ को बुलाया है।'' **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ رب العزت ने बड़ी अपनाइयत व शफ़्क़त से उन से दरयाफ़्त फ़रमाया : ''मुझे दा'वत में क्या खिलाइयेगा ?'' इस पर उन साहि़ब ज़ादे ने अपने कुरते का दामन जो दोनों हाथों से पकड़े हुए थे फैला दिया, जिस में माश की दाल और दो चार मिर्चें पड़ी हुई थीं। कहने लगे : देखिये ना ! येह दाल लाया हूं। हुज़ूर ने उन के सर पर दस्ते शफ़्क़त फैरते हुए फ़रमाया : ''अच्छा मैं और (ख़ादिमे ख़ास ह़ाजी किफ़ायतुल्लाह साहि़ब رحمۃ اللہ تعالی علیہ की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया) येह कल दस बजे आएंगे।'' और ह़ाजी साहि़ब से फ़रमाया मकान का पता दरयाफ़्त कर लीजिये। ग़रज़ साहि़ब ज़ादे मकान का पता बता कर ख़ुश ख़ुश चले गए।

दूसरे दिन जब वक़्ते मुक़र्ररा पर **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ رب العزت अ़साए मुबारक हाथ में लिये हुए बाहर तशरीफ लाए और ह़ाजी साहि़ब से फ़रमाया : ''चलिये।'' (तो) उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''कहा ?'' फ़रमाया : ''उन साहि़ब ज़ादे के यहां दा'वत का जो वा'दा किया है, आप को मकान का पता मा'लूम हो गया है या नहीं ?'' अ़र्ज़ की : ''हां हुज़ूर ! मलूक पूर में है।'' और साथ हो लिये। जिस वक़्त मकान पर पहुंचे तो वोह साहि़ब ज़ादे दरवाज़े पर खड़े इन्तिज़ार में थे। **आ'ला ह़ज़रत** علیہ رحمۃ رب العزت को देखते ही येह कहते हुए मकान के अन्दर की त़रफ़ भागे : ''मौलवी साहि़ब आ गए।'' दरवाज़े के बाहर एक छप्पर बना हुवा था। आप علیہ رحمۃ رب العزت वहां खड़े हो कर इन्तिज़ार फ़रमाने लगे। कुछ देर बा'द एक बोसीदा चटाई आई और डहलिया में मोटी मोटी बाजरे की रोटियां और मिट्टी की रिकाबी में वोही माश की दाल जिस में मिर्चों के टुकड़े पड़े हुए थे,

ला कर रख दी गई और वोह साहि़ब ज़ादे कहने लगे : "खाइये ।" **आ'ला ह़ज़रत** عليه رحمة رب العزت ने फ़रमाया : "बहुत अच्छा ! खाता हूं, हाथ धोने के लिये पानी ले आइये ।" उधर वोह पानी लाने को गए और इधर ह़ाजी साहि़ब ने कहा कि हु़ज़ूर ! येह मकान नक़्क़ारची (या'नी नक़्क़ारा बजाने वाले) का है । **आ'ला ह़ज़रत** عليه رحمة رب العزت येह सुन कर कबीदा ख़ाति़र (या'नी रन्जीदा) हुए और त़न्ज़न फ़रमाया : "अभी क्यूं कहा, खाना खाने के बा'द कहा होता !" इतने में वोह साहि़ब ज़ादे पानी ले कर आ गए। आप عليه رحمة رب العزت ने दरयाफ़्त फ़रमाया : "आप के वालिद साहि़ब कहां हैं और क्या काम करते हैं ?" दरवाज़े के पर्दे के पीछे से उन साहि़ब ज़ादे की वालिदा साहि़बा ने अ़र्ज़ की : "हु़ज़ूर ! मेरे शोहर का इन्तिक़ाल हो गया, वोह किसी ज़माने में नौबत (या'नी नक़्क़ारा) बजाते थे, इस के बा'द तौबा कर ली थी, अब सिर्फ़ येह लड़का है जो राज मज़दूरों के साथ मज़दूरी करता है । **आ'ला ह़ज़रत** عليه رحمة رب العزت ने येह सुन कर दुआ़ए ख़ैरो ब-र-कत फ़रमाई । ह़ाजी साहि़ब ने हु़ज़ूर के हाथ धुलवाए और ख़ुद भी हाथ धो कर शरीके त़आ़म हो गए मगर दिल ही दिल में येह सोचते रहे कि **आ'ला ह़ज़रत** عليه رحمة رب العزت को खाने में बहुत एह़तियात़ है, ग़िज़ा में सूजी के बिस्कुट का इस्ति'माल है, येह रोटी और वोह भी बाजरे की और इस पर माश की दाल, किस त़रह़ तनावुल फ़रमाएंगे ?" मगर क़ुरबान इस अख़्लाक़ और दिलदारी के कि मेज़बान की ख़ुशी के लिये ख़ूब सैर हो कर खाया । ह़ाजी साहि़ब का बयान है कि मैं जब तक खाता रहा, **आ'ला ह़ज़रत** عليه رحمة رب العزت भी बराबर तनावुल फ़रमाते रहे वहां से वापसी में पोलीस चौकी के क़रीब मेरे शुब्हे को दूर करने के लिये इर्शाद फ़रमाया : अगर ऐसी ख़ुलूस की दा'वत रोज़ हो तो मैं रोज़ क़बूल करूं ।" (حیات اعلیٰ حضرت، ج۱، ص۱۲۲،۱۲۳)

ग़रीबों पर ख़ुसूसी शफ़्क़त

मुह़द्दिसे आ'ज़मे पाकिस्तान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद सरदार अह़मद क़ादिरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی उ़मूमन मालदारों की दा'वत क़बूल न करते थे लेकिन इस के बर अ़क्स अगर कोई ग़रीब मुसल्मान दा'वत की पेशकश करता तो जहां तक मुम्किन होता आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़बूल फ़रमा लेते और उस के मा'मूली व सादा खाने पर भी उस की ता'रीफ़ फ़रमाते ताकि उस के दिल में कोई मलाल न आए। एक मर्तबा एक ग़रीब आदमी की दा'वत पर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस के घर तशरीफ़ ले गए। वहां जा कर मा'लूम हुवा कि उस का मकान छप्पर नुमा और बदबूदार अ़लाक़े में वाक़ेअ़ था मगर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस की दिलजूई के लिये उस के हां खाना तनावुल फ़रमाया और अपने किसी अ़मल से उस ग़रीब को मह़सूस न होने दिया कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बदबू मह़सूस कर रहे हैं, ह़ालां कि आ़म ह़ालात में मा'मूली सी बदबू भी आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के लिये ना गवार होती। (حیاتِ محدّثِ اعظم، ص۱۸۴، ملخصاً)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(16) लिबास में सादगी इख़्तियार कीजिये

लिबास में सादगी इख़्तियार कीजिये। **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 52 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی लिखते हैं : इतना लिबास जिस से सित्रे औ़रत हो जाए और गरमी सर्दी की तक्लीफ़

से बचे **फ़र्ज़** है और इस से ज़ाइद जिस से ज़ीनत मक़्सूद हो और येह कि जब कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दिया है तो उस की ने'मत का इज़्हार किया जाए, येह **मुस्तहब** है। ख़ास मौक़अ़ पर म-सलन जुमुआ़ या ईद के दिन उ़म्दा कपड़े पहनना **मुबाह** है। इस क़िस्म के कपड़े रोज़ न पहने क्यूं कि हो सकता है कि इतराने लगे और ग़रीबों को जिन के पास ऐसे कपड़े नहीं हैं नज़रे **हक़ारत** से देखे, लिहाज़ा इस से बचना ही चाहिये। और **तकब्बुर** के तौ़र पर जो लिबास हो वोह **मम्नूअ़** है, **तकब्बुर** है या नहीं इस की शनाख़्त यूं करे कि इन कपड़ों के पहनने से पहले अपनी जो ह़ालत पाता था अगर पहनने के बा'द भी वोही ह़ालत है तो मा'लूम हुवा कि इन कपड़ों से **तकब्बुर** पैदा नहीं हुवा। अगर वोह ह़ालत अब बाक़ी नहीं रही तो **तकब्बुर** आ गया। लिहाज़ा ऐसे कपड़े से बचे कि **तकब्बुर** बहुत बुरी सिफ़त है।

(ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، فصل في اللبس، ج۹، ص۵۷۹)

काश ! येह लिबास नर्म न होता

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه जब तक ख़लीफ़ा नहीं बने थे आप के लिये जुब्बा एक हज़ार दीनार में ख़रीदा जाता था मगर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते अगर येह खुर-दरा न होता (बल्कि ख़ूब मुलायम होता) तो कितना अच्छा था लेकिन जब तख़्ते ख़िलाफ़त पर मु-तमक्किन हुए तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के लिये पांच दिरहम का कपड़ा ख़रीदा जाता, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते अगर येह नर्म न होता (बल्कि खुर-दरा होता) तो कितना अच्छा था ! आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया : ऐ अमीरल मुअमिनीन ! आप का वोह उ़म्दा लिबास, आ'ला सुवारी और बेश क़ीमत इत्र कहां गया ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : मेरा नफ़्स

ज़ीनत का शौक़ रखने वाला है वोह जब किसी दुन्यवी मर्तबे का मज़ा चखता तो उस से ऊपर वाले मर्तबे का शौक़ रखता, यहां तक कि जब मैं ने ख़िलाफ़त का मज़ा चखा जो सब से बुलन्द मर्तबा है तो अब उस चीज़ का शौक़ हुवा जो अल्लाह तआला के पास है (या'नी जन्नत)।

(احیاء علوم الدین، ج٣، ص٤٣٦)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सादगी

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उ़मूमन **सादा और सफ़ेद लिबास बग़ैर इस्त्री** के इस्ति'माल करना पसन्द फ़रमाते हैं जब कि सर पर खुलते हुए **सब्ज़ रंग का सादा इमामा** बांधते हैं। एक म-दनी मुज़ाकरे में इस की हिक्मत बयान करते हुए कुछ यूं इर्शाद फ़रमाया : "मैं **उ़म्दा और महंगा लिबास** पहनना पसन्द नहीं करता ह़ालां कि मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम से बेहतरीन लिबास पहन सकता हूं। मुझे तोह़फ़े में भी लोग निहायत क़ीमती और चमकदार क़िस्म के कपड़े दे जाते हैं लेकिन मैं खुद पहनने के बजाए किसी और को दे देता हूं क्यूं कि एक तो اَلْحَمْدُلِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरे मिज़ाज में अल्लाह तआला ने **सादगी** अ़ता फ़रमाई है, दूसरा मेरे पीछे लाखों लोग हैं अगर मैं **महंगे तरीन लिबास** पहनूंगा तो येह भी मेरी पैरवी करने की कोशिश करेंगे। मालदार इस्लामी भाई तो शायद **पैरवी** करने में काम्याब हो भी जाएं लेकिन मेरे ग़रीब इस्लामी भाई कहां जाएंगे इस लिये मैं अपने **ग़रीब इस्लामी भाइयों की मह़ब्बत** में उ़म्दा लिबास पहनने से **कतराता** हूं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की इन पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।** اٰمين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(17) म-दनी माहोल अपना लीजिये

तकब्बुर और दीगर गुनाहों से बचने का जज़्बा पाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का म-दनी माहोल अपना लीजिये । اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! **''दा'वते इस्लामी''** ने लाखों मुसल्मानों बिल ख़ुसूस नौ जवान इस्लामी भाइयों और बहनों की ज़िन्दगियों में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया, कई बिगड़े हुए नौ जवान **तौबा** कर के राहे रास्त पर आ गए, बे नमाज़ी न सिर्फ़ **नमाज़ी** बल्कि नमाज़ें पढ़ाने वाले (या'नी इमामे मस्जिद) बन गए, मां बाप से ना ज़ैबा रविय्या इख़्तियार करने वाले बा अदब हो गए, कुफ़्र के अन्धेरों में भटकने वालों को **नूरे इस्लाम** नसीब हुवा, यूरोपी मुमालिक की रंगीनियों को देखने के ख़्वाहिश मन्द **का'बतुल मुशर्रफ़ा व गुम्बदे ख़ज़रा** की ज़ियारत के लिये **बे क़रार** रहने लगे, दुन्या के बे जा ग़मों में घुलने वाले फ़िक्रे आख़िरत की म-दनी सोच के **ह़ामिल** बन गए, फ़ोह़ूश रसाइल और फूहड़ डाइजस्टों के शाइक़ीन उ-लमाए अहले सुन्नत دامت فیوضھم के रसाइल और दीगर दीनी कुतुब का **मुत़ा-लआ़** करने लगे, तफ़्सीह़ की ख़ातिर सफ़र के आ़दी म-दनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले बन गए और मह़ज़ दुन्या की दौलत इकठ्ठी करने को मक़्सदे ह़यात समझने वालों ने इस म-दनी मक़्सद को अपना लिया कि (اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ) **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।''** **''दा'वते इस्लामी''** से वाबस्ता होने की ब-र-कत से आ'ला अख़्लाक़ी औसाफ़ اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

आप के किरदार का भी हिस्सा बनते चले जाएंगे। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि वोह अपने शहर में होने वाले ''दा'वते इस्लामी'' के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करे और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले **आशिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करे। इन म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र की ब-र-कत से आप की ज़िन्दगी में म-दनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **इस्लामी बहनों** को भी चाहिये कि अपने शहर में होने वाले **इस्लामी बहनों** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत करें और **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबिय्यत के **म-दनी क़ाफ़िलों** की मुसाफ़िरा बनने की सआ़दत भी हासिल फ़रमाती रहें मगर इस्लामी बहनों के म-दनी क़ाफ़िले की हर मुसाफ़िरा के साथ उस के बच्चों के अब्बू या क़ाबिले ए'तिमाद महरम का साथ होना लाज़िमी है नीज़ ज़िम्मेदारान को अपनी मरज़ी से म-दनी क़ाफ़िले सफ़र करवाने की इजाज़त नहीं म-सलन पाकिस्तान की इस्लामी बहनों के म-दनी क़ाफ़िले के लिये ''इस्लामी बहनों की मजलिस बराए पाकिस्तान'' की मन्ज़ूरी ज़रूरी है।

ईमां की बहार आई फ़ैज़ाने मदीना में

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ ''फ़ैज़ाने सुन्नत'' जिल्द 2 के 499 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल बाब, ''**ग़ीबत की तबाह कारियां**'' सफ़ह़ा 96 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه लिखते

हैं : **सुल्तान आबाद** (बाबुल मदीना कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि हमारे अ़लाक़े में एक ग़ैर मुस्लिम (उ़म्र तक़रीबन 30 साल) अपने दोस्तों के साथ रहता था जिन में कुछ मुसल्मान भी थे, आज कल के अक्सर नौ जवानों की त़रह़ येह लोग भी केबल पर फ़िल्में डिरामे देखा करते थे। जब र-मज़ानुल मुबारक (सि. 1429 हि.) में **म-दनी चेनल** का आग़ाज़ हुवा तो केबल पर इस के म-दनी सिल्सिले जारी हुए, उस ग़ैर मुस्लिम ने जब येह सिल्सिले देखे तो उसे बड़े अच्छे लगे। अब वोह अक्सर व बेशतर **म-दनी चेनल** ही देखा करता, म-दनी चेनल की ब-र-कत से आख़िरे कार वोह **कुफ़्र के अंधेरे** से नजात पाने और **इस्लाम के नूर** से अपने दिल को चमकाने के लिये दा'वते इस्लामी के आ़लमी म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** ह़ाज़िर हुवा, और कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गया। फिर येह इस्लामी भाई हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हज़ारों इस्लामी भाइयों और **म-दनी चेनल** के नाज़िरीन के सामने **सरकारे ग़ौसे आ'ज़म** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم का मुरीद हो कर क़ादिरी र-ज़वी भी बन गया। नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी, चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, कभी कभार सब्ज़ सब्ज़ इ़मामा शरीफ़ सर पर सजा कर इस का फ़ैज़ भी लूटने लगा, **दा'वते इस्लामी** के **मद्र-सतुल मदीना** (बालिग़ान) में क़ुरआने मजीद पढ़ने का सिल्सिला भी शुरूअ़ कर दिया। सह़राए मदीना, मदी-नतुल औलिया **मुलतान शरीफ़** में होने वाले **दा'वते इस्लामी** के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में भी शरीक हुवा।

अल्लाह तआ़ला उन को और हम सब को ईमान पर साबित क़दम रखे । امین بِجاہِ النَّبِیِّ الْامین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क्या आप नेक बनना चाहते हैं ?

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ए कार पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ बनामे "**म-दनी इन्आ़मात**" ब सूरते सुवालात अ़त़ा फ़रमाया है । इस्लामी भाइयों के लिये 72, इस्लामी बहनों के लिये 63 और त़-ल-बए इ़ल्मे दीन के लिये 92, दीनी त़ालिबात के लिये 83, म-दनी मुन्नों और मुन्नियों के लिये 40 और ख़ुसूसी इस्लामी भाइयों (या'नी गूंगे बहरों) के लिये 27 **म-दनी इन्आ़मात** हैं । बे शुमार इस्लामी भाई, इस्लामी बहनें और त़-लबा "म-दनी इन्आ़मात" के मुत़ाबिक़ अ़मल कर के रोज़ाना सोने से क़ब्ल "**फ़िक्रे मदीना**" या'नी अपने आ'माल का जाएज़ा ले कर "म-दनी इन्आ़मात" के पॉकिट साइज़ रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर करते हैं। **इन म-दनी इन्आ़मात** को अपना लेने के बा'द नेक बनने और गुनाहों से बचने की राह में ह़ाइल रुकावटें **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से ब तदरीज दूर होती चली जाती हैं और इस की ब-र-कत से اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न भी बनता है। हमें चाहिये कि बा किरदार मुसल्मान

बनने के लिये मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से ''म-दनी इन्आ़मात का रिसाला'' ह़ासिल करें और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना (या'नी अपना मुह़ा-सबा) करते हुए इस में दिये गए ख़ाने पुर करें और हर म-दनी या'नी क़-मरी माह (हिजरी सिन) के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के म-दनी इन्आ़मात के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लें।

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में बिशारत दी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर करने वाले किस क़दर ख़ुश क़िस्मत होते हैं इस का अन्दाज़ा इस **म-दनी बहार** से लगाइये चुनान्चे ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई का कुछ इस त़रह़ ह़लफ़िया बयान है कि माहे र-जबुल मुरज्जब 1426 हि. की एक शब मुझे ख़्वाब में **मुस्त़फ़ा जाने रह़मत** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की अ़ज़ीम सआ़दत मिली। लबहाए मुबा-रका को जुम्बिश हुई और रह़मत के फूल झड़ने लगे, अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : **जो इस माह रोज़ाना पाबन्दी से म-दनी इन्आ़मात से मु-तअ़ल्लिक़ फ़िक्रे मदीना करेगा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।**

म-दनी इन्आ़मात की भी मरह़बा क्या बात है
कुर्बे ह़क़ के त़ालिबों के वासित़े सौग़ात है

(فیضانِ سنت، ج۱، باب فیضانِ رمضان، ص۱۱۳۵)

(18) सात मुफ़ीद अवराद

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **तकब्बुर** से बचने के लिये मज़्कूरा उमूर के साथ साथ रूहानी इलाज भी कीजिये, **म-सलन**

(1) जब भी दिल में **तकब्बुर** महसूस हो तो ''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ'' एक बार पढ़ने के बा'द उलटे कन्धे की तरफ़ तीन बार थू थू कर दीजिये।

(2) रोज़ाना दस बार ''اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ'' पढ़ने वाले पर शैतान से हिफ़ाज़त करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर देता है।

(مسند ابی یعلیٰ ،مسند انس بن مالك ،الحدیث ٤١٠٠،ج٣،ص٤٠٠ ملخصاً)

(3) सूरए इख़्लास ग्यारह बार सुब्ह़ (आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह़ है) पढ़ने वाले पर अगर शैतान मअ़ लश्कर के कोशिश करे कि इस से गुनाह कराए तो न करा सके जब तक कि येह ख़ुद न करे। (الوظیفۃ الکریمہ،الاذکار الصباحیۃ،ص١٨)

(4) सू-रतुन्नास पढ़ लेने से भी वस्वसे दूर होते हैं।

(5) जो कोई सुब्ह़ व शाम इक्कीस इक्कीस बार ''لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ'' पानी पर दम कर के पी लिया करे तो اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ वस्वसए शैतानी से बहुत ह़द तक अम्न में रहेगा।

(مراۃ المناجیح،باب الوسوسۃ،ج١،ص٨٧)

(6) ''هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ''

कहने से फ़ौरन वस्वसा दूर हो जाता है।

(7) سُبْحٰنَ الْمَلِکِ الْخَلَّاقِ ط اِنْ یَّشَاْ یُذْهِبْکُمْ وَیَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِیْدٍ ط وَمَا ذٰلِکَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِیْزٍ ٥ की कसरत इसे (या'नी वस्वसे को) जड़ से क़त्अ़ कर देती है। (فتاوٰی رضویہ تخریج شدہ، ج۱، ص۷۷۰)

इलाज के बा वुजूद इफ़ाक़ा न हो तो ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर भरपूर इलाज के बा'द भी **इफ़ाक़ा** न हो तो घबराइये नहीं बल्कि इलाज जारी रखिये कि **''दिल को भी आराम हो ही जाएगा।''** क्यूं कि अगर हम ने इलाज तर्क कर दिया तो गोया खु़द को मुकम्मल तौ़र पर शैता़न के ह़वाले कर दिया और वोह हमें कहीं का न छोड़ेगा। लिहाज़ा हमें चाहिये कि **तकब्बुर** से जान छुड़ाने की कोशिश जारी रखें। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْهِ رَحْمَۃُ اللّٰهِ الْوَالِی (अल मु–तवफ़्फ़ा 505 हि.) हम जैसों को समझाते हुए लिखते हैं : ''अगर तुम मह़सूस करो कि शैता़न, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से पनाह मांगने के बा वुजूद तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ता और ग़ालिब आने की कोशिश करता है तो इस का मत़लब येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को हमारे मुजाहदे, हमारी कु़व्वत और सब्र का इम्तिह़ान मक़्सूद है या'नी **अल्लाह** तआ़ला आज़माता है कि तुम शैता़न से मुक़ाबला और मुह़ा–रबा (या'नी जंग) करते हो या उस से मग़्लूब हो जाते हो।'' (منہاج العابدین، العائق الثالث: الشیطن، ص۴۶، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"मदीना" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 मु-तफ़र्रक़ म-दनी फूल

(1) मकान को रेशम, चांदी, सोने से आरास्ता करना म-सलन दीवारों, दरवाज़ों पर रेशमी पर्दे लटकाना और जगह जगह क़रीने से सोने चांदी के ज़ुरूफ़ व आलात (या'नी बरतन और औज़ार) रखना, जिस से मक़्सूद महज़ आराइश व ज़ैबाइश हो तो कराहत है और अगर **तकब्बुर** व तफ़ाख़ुर से ऐसा करता है तो ना जाइज़ है। (ردالمحتار، ج۹، ص۵۸۵) ग़ालिबन कराहत की वजह येह होगी कि ऐसी चीज़ें अगर्चे इब्तिदाअन **तकब्बुर** से न हों, मगर बिल आख़िर उ़मूमन इन से **तकब्बुर** पैदा हो जाया करता है। (بہار شریعت،حصّہ ۱۶،ص۵۷)

(2) रेशम का रुमाल नाक वग़ैरा पूंछने या वुज़ू के बा'द हाथ मुंह पूंछने के लिये रखना जाइज़ है या'नी जब कि उस से पूंछने का काम ले, रुमाल की त़रह़ उसे न रखे और **तकब्बुर** भी मक़्सूद न हो।

(ردالمحتار، کتاب الحظر و الإباحة، ج۹، ص۵۸۷ ـ ۵۸۸)

(3) नाक, मुंह पूंछने के लिये रुमाल रखना या वुज़ू के बा'द हाथ मुंह पूंछने के लिये रुमाल रखना जाइज़ है, इसी त़रह़ पसीना पूंछने के लिये रुमाल रखना जाइज़ है और अगर बराहे **तकब्बुर** हो तो मन्अ़ है।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة، ج۵، ص۳۳۳)

(4) येह शख़्स सुवारी पर है और इस के साथ और लोग पैदल चल रहे हैं, अगर महज़ अपनी शान दिखाने और **तकब्बुर** के लिये ऐसा करता है तो मन्अ़ है। (الفتاوی الهندیة، ج۵، ص۳۶۰)

और ज़रूरत से हो तो ह़रज नहीं, म-सलन येह बूढ़ा या कमज़ोर है कि चल न सकेगा या साथ वाले किसी त़रह़ इस के पैदल चलने को गवारा ही नहीं करते जैसा कि बा'ज़ मर्तबा उ़-लमा व मशाइख़ के साथ दूसरे लोग ख़ुद पैदल चलते हैं और इन को पैदल चलने नहीं देते, इस में कराहत नहीं जब कि अपने दिल को क़ाबू में रखें और **तकब्बुर** न आने दें और महज़ उन लोगों की दिलजूई मन्ज़ूर हो। (بہار شریعت،حصّہ ١٦،ص ٢٤٠)

(5) क़दरे किफ़ायत से ज़ाइद इस लिये कमाता है कि फ़ु-क़रा व मसाकीन की ख़बर गीरी कर सकेगा या अपने क़रीबी रिश्तेदारों की मदद करेगा येह मुस्तह़ब है और येह नफ़्ल इबादत से अफ़्ज़ल है, और अगर इस लिये कमाता है कि मालो दौलत ज़ियादा होने से मेरी इ़ज़्ज़तो वक़ार में इज़ाफ़ा होगा, फ़ख़्रो **तकब्बुर** मक़्सूद न हो तो येह मुबाह़ है और अगर महज़ माल की कसरत या तफ़ाख़ुर मक़्सूद है तो मन्अ़ है।

(الفتاوى الهندية"، كتاب الكراهية، الباب الخامس عشر في الكسب، ج٥، ص٣٤٩)

ख़बरदार ! ग़ीबत ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है

ग़ीबत के ख़िलाफ़ ए'लाने जंग

''न ग़ीबत करेंगे न ग़ीबत सुनेंगे''

اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ